दोहांजलि

(दोहे सप्तशती-सगुण-निर्गुण-नीतिपरक)

लेखक

सुरेश चौधरी 'इंदु'

शुक्तिका प्रकाशन

दोहांजलि (Dohanjali)

(दोहे सप्तशती-सगुण-निर्गुण-नीतिपरक)

ISBN : 978-93-94660-62-5

प्रकाशक :

शुक्तिका प्रकाशन

स्वामित्व : ए एंड ए इंटरप्राईजेज

पी 516/4, बी.एल. साहा रोड

कोलकाता-700038

मो. : 8582965531

लेखक : **सुरेश चौधरी 'इंदु'**

प्रथम संस्करण : 2025

©सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : 250/-

संपादन : **मीतू कनोडिया**

शब्द सज्जा : परमानंद झा, मो. : 95550-21641

मुद्रक : मिश्का इन्फोटेक, कोलकाता

माँ वागेश्वरी कादंबरी, नमन माँ वीणा वादिनी
मात वागर्थ दे अभिधा दे, प्रज्ञा दे हंस वाहिनी
माँ विवेक दे मनीषिका दे, माँ कर दे हृदय परिष्कृत
ज्ञान ज्योत मात जला ऐसी, आचरण होवे सुसंस्कृत
आनंद उमँग का प्रसार हो, अंग अंग नव रँग रंजित
नवल ताल संग नव गीत हों, नवल पल्लव हों पल्लवित

शुभ्र ज्ञान का उत्सर्जन कर, नव चेतस चेतन कर दे
कलुष अंध हर वर संसिद्धा, नव मेधा प्रेषण कर दे
पीत वर्ण मंडित प्रेम धरा, हो प्रज्ञा प्रीत विभूषित
श्वेत वसना चित्त हर्षित कर, कर दे माँ तन मन सिंचित

वसुंधरा धी आलोक से खोलो संकुचित अर्गला
जयति जयति जयति माँ वत्सला, हंस आरूढ़ मंगला
माँ वागेश्वरी कादंबरी, नमन माँ वीणा वादिनी
मात वागर्थ दे अभिधा दे, प्रज्ञा दे हंस वाहिनी

प्राक्कथन

भारतीय साहित्य में दोहों की परंपरा अनंतकाल से चली आ रही है। दोहा, अपनी संक्षिप्तता में गहनता और सरलता में जीवन का दर्शन प्रस्तुत करता है। यह विधा केवल काव्य-रचना का माध्यम नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, दर्शन और अध्यात्म का जीवंत प्रतिबिंब भी है। ''**दोहांजलि**'' के माध्यम से मैंने इस अमूल्य परंपरा को अपनी शैली और अनुभूतियों के साथ प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास किया है।

मेरे जीवन की साहित्यिक यात्रा सत्तर वर्षों से भी अधिक की साधना और अनुभव का फल है। 1952 में झारखंड के जमशेदपुर में जन्म लेकर मैंने जीवन के प्रारंभिक अनुभवों से साहित्य के बीज बोए। हिंदी साहित्य और सनातन दर्शन के प्रति मेरा झुकाव बचपन से ही रहा। 32 प्रकाशित पुस्तकों की यह यात्रा ''दोहांजलि'' के साथ अपनी 36वीं कड़ी तक पहुँची है। यह पुस्तक सगुण, निर्गुण और नीतिपरक विषयों को समर्पित है।

सगुण खंड में ईश्वर की महिमा, भक्तिमय प्रेम और आध्यात्मिक अनुभूतियों को शब्दों में पिरोया गया है। इसमें आराध्य के प्रति समर्पण और अनुग्रह की भावनाएँ प्रमुख हैं।

निर्गुण खंड में ब्रह्म का गूढ़ दर्शन और उसकी निर्गुण सत्ता का विवेचन मिलता है। यहाँ जीवन और ब्रह्मांड के रहस्यों को सरल शब्दों में प्रकट करने का प्रयास है।

नीतिपरक खंड में दोहों के माध्यम से जीवन के व्यावहारिक पक्षों, सदाचार, सत्य और मानवता के मार्ग को उजागर किया गया है। यह खंड न केवल जीवन जीने की कला सिखाता है, बल्कि व्यक्ति को आत्मिक उन्नति की ओर भी प्रेरित करता है।

इस पुस्तक के निर्माण में मेरी छोटी बहन मीतू कनोडिया का योगदान अविस्मरणीय है। वर्षों से लिखे गए इन दोहों का संपादन, क्रम निर्धारण और विधागत त्रुटियों को दूर कर इन्हें पुस्तक का रूप देना अत्यंत श्रमसाध्य कार्य था, जिसे मीतू ने पूर्ण निष्ठा और समर्पण के साथ किया। मेरी अस्वस्थता के कारण मैं केवल 660 दोहे ही पूर्ण कर पाया था। मीतू के 51 दोहों को सम्मिलित कर हमने सप्तशती के रूप में 711 दोहों की यह माला पूरी की।

दोहांजलि की रचना हिंदी वर्णमाला के क्रम में की गई है, ताकि पाठक अपनी रुचि और सुविधा के अनुसार इसे पढ़ सकें। मेरी आशा है कि यह पुस्तक न केवल साहित्य-प्रेमियों को आनंदित करेगी, बल्कि उन्हें जीवन के गहरे रहस्यों, मूल्यों और आध्यात्मिकता को समझने की प्रेरणा भी देगी।

यह पुस्तक मेरी आत्मा का वह अंश है, जो पाठकों तक आत्मीयता और आध्यात्मिकता का संदेश पहुँचाना चाहता है। साहित्य और अध्यात्म के प्रति मेरे समर्पण का यह प्रयास आपके मन और आत्मा को स्पर्श करेगा। ''दोहांजलि'' मेरी वह साधना है, जो साहित्यिक यात्रा की ऊँचाई पर पहुँचकर भी निरंतर नई दिशाओं में प्रवाहित होती रहेगी।

मैं आभारी हूँ **रचना सरन जी** का, **मीतू कनोडिया जी** का एवं **चन्दा प्रह्लादका जी** का जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर पुस्तक को वर्तमान रूप में लाने में विशेष योगदान दिया।

सादर,

सुरेश कुमार चौधरी 'इंदु'

वसंत पंचमी, संवत 2081

तदनुसार 2 फरवरी 2025

भूमिका

दोहों का एक ऐसा संकलन है जिसमें सिर्फ 13, 11 मात्राओं का संयोजन ही नहीं अपितु **आदरणीय सुरेश चौधरी जी सर** के जीवन-अनुभवों का निचोड़ भी है। इसको पढ़ते हुए ऐसा लगता है जैसे हम अपने बड़ों से बातें कर रहे हैं तथा उनसे कुछ सीख ले रहे हैं।

''**दोहांजलि**'' के भक्ति पर आधारित दोहों में अविरल भक्तिधारा दिखाई देती है, वहीं नीति के दोहे जीवन के आवश्यक पाठ पढ़ाते हैं। इसमें सर का व्यावहारिक दृष्टिकोण भी दिखता है। कहीं भी जड़ता नहीं है, बड़ी ही सहजता से अपनी बात कही गयी है। जब कोई अर्थशास्त्र का विद्यार्थी साहित्य में कदम रखता है तब वह अपनी बात को कैसे रखता है, इस संकलन में यह बात भी दिखाई देती है। धर्म-शास्त्रों पर सर का अध्ययन, विश्लेषण एवं प्रस्तुतिकरण आश्चर्यजनक है। ''दोहांजलि'' में संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दों के साथ-साथ प्रचलित प्रान्तीय भाषाओं का भी समावेश किया गया है। दोहे सार्थक व संदेशप्रद हैं। कहीं-कहीं शिल्प में अटकाव भले ही हो परन्तु भाव कहीं भी बाधित नहीं है। हम यह बात पूर्ण विश्वास के साथ कह सकते हैं कि पाठकवृन्द को इससे कुछ न कुछ जीवनोपयोगी सीख अवश्य मिलेगी।

अंत में ''दोहांजलि'' के लिए अनंत शुभकामनाओं के साथ यही कहना चाहूँगी कि आदरणीय का स्नेह एवं संरक्षण रचनाकार संस्था को लंबे समय तक मिलता रहे। उनकी जीवंतता तथा सकारात्मक ऊर्जा सदैव बनी रहे तथा वे स्वयं साहित्य-साधनारत रहकर हम सभी को साहित्य लेखन हेतु प्रेरित करते रहें।

शुभकामनाओं के साथ,

मीतू कनोडिया

शिक्षिका, छंदकारा, गीतकारा

अनुक्रमणिका

क्रमांक	दोहा संख्या
अ	दोहा संख्या 1 से 33
आ	दोहा संख्या 34 से 45
इ	दोहा संख्या 46 से 48
ई	दोहा संख्या 49 से 50
उ	दोहा संख्या 51 से 56
ए	दोहा संख्या 57 से 58
क	दोहा संख्या 59 से 121
ख	दोहा संख्या 122 से 124
ग	दोहा संख्या 125 से 136
घ	दोहा संख्या 137 से 142
च	दोहा संख्या 143 से 162
छ	दोहा संख्या 163 से 166
ज	दोहा संख्या 167 से 205
झ	दोहा संख्या 206 से 207
ट	दोहा संख्या 208 से 210
ठ	दोहा संख्या 211
ड	दोहा संख्या 212
त	दोहा संख्या 213 से 233

क्रमांक	दोहा संख्या
थ	दोहा संख्या 234
द	दोहा संख्या 235 से 262
ध	दोहा संख्या 263 से 275
न	दोहा संख्या 276 से 325
प	दोहा संख्या 326 से 375
फ	दोहा संख्या 376
ब	दोहा संख्या 377 से 412
भ	दोहा संख्या 413 से 423
म	दोहा संख्या 424 से 486
य	दोहा संख्या 487 से 497
र	दोहा संख्या 498 से 526
ल	दोहा संख्या 527 से 551
व	दोहा संख्या 552 से 581
श	दोहा संख्या 582 से 589
स	दोहा संख्या 590 से 640
ह	दोहा संख्या 641 से 656
क्ष	दोहा संख्या 657 से 658
त्र	दोहा संख्या 659
ज्ञ	दोहा संख्या 660

कुछ दोहे मीतू कनोडिया के (661 से 711 तक)

क्रमांक	दोहा संख्या
अ	दोहा संख्या 661 से 662
इ	दोहा संख्या 663
क	दोहा संख्या 664
ख	दोहा संख्या 665 से 667
च	दोहा संख्या 668
छ	दोहा संख्या 669
ज	दोहा संख्या 670
ट	दोहा संख्या 671
द	दोहा संख्या 672 से 675
ध	दोहा संख्या 676
न	दोहा संख्या 677
प	दोहा संख्या 678 से 682
भ	दोहा संख्या 683 से 685
म	दोहा संख्या 686 से 688
य	दोहा संख्या 689 से 690
र	दोहा संख्या 691 से 696
ल	दोहा संख्या 697 से 698
श	दोहा संख्या 699
स	दोहा संख्या 700 से 708
ह	दोहा संख्या 709 से 710
क्ष	दोहा संख्या 711
परिचय	पेज संख्या 154

(1)

अब साहस दिखलाइये, कर वीरोचित कर्म।
तभी बचेगी सभ्यता, धरती, मानव, धर्म॥

(2)

अगरु उष्ण अग्निष्ठिका, दे आनंद उमंग।
शिशिर सरोवर सहसजे, भ्रमित भ्रमर सारंग॥

(3)

अमर-लता को देखिये, लिपटे पीपल माय।
एकाकार ज्यों रहे, प्रेम रीत बतलाय॥

(4)

अजर अनन्ता ब्रह्म प्रभु, लीला करे रिझाय।
धन्य धरा ब्रज धाम की, कष्ट दरस से जाय॥

(5)

अमरित बेला पूजता, करता तेरा ध्यान।
किरपा बरसा गुरु जगत, दे दे मुझको ज्ञान॥

(6)

अमिय आनंद प्राप्त हो, हरि हरि भज ले आज।
अद्भुत अनंत छवि बसा, पूर्ण करो सब काज॥

(7)

अनुपम अक्षय रूप हैं, नाम जीवनाधार।
ईश राम से दे मिला, करो विनय स्वीकार॥

(8)

असुर निकन्दन पवनसुत, बज्र सदृश है अंग।
हर संकट को मेटते, रक्त वर्ण बजरंग॥

(9)

अर्ध रात्रि का था पहर, गरजे मेघ अपार।
कारागृह में कंस की, हरि लीन्हो अवतार॥

(10)

अधर बिम्ब फल दृग जलज, मधुर मधुर मुस्कान।
सजे कोदंड वाम पर, राघव कृपानिधान॥

(11)

अक्षर अक्षय अमिय घट, कृपा न क्षय हो पात्र।
जयति नियामक सतत वर, जीव लक्ष्य है मात्र॥

(12)

अरुणिम दिनकर ढल रहा, दे जीवन विश्राम।
पुनः बटोही आयगा, पहन वस्त्र अभिराम।।

(13)

अरुणित सूरज क्षितिज पर, मन में कैसा मौन।
धीरे से डसती निशा, चंदन लाये कौन॥

(14)

अन्तर्घट कल्मष भरा, नाथ तमस कर दूर।
सुख दुख की दुस्तर लहर, प्रभु हो कभी न क्रूर॥

(15)

अंतस को झकझोरती, आई सुंदर भोर।
श्याम गगन में लालिमा, लखकर धरा विभोर॥

(16)

अंतिम कुंजी गुच्छ की, देती खोल किवार।
पा जायेगा लक्ष्य तू, रुको न हिम्मत हार॥

(17)

अग्नि जनित यह देह है, जा यह अग्नि समाय।
पञ्च कोश यात्रा करी, नवल जन्म पुनि पाय॥

(18)

अलकें मतवाली फिरत, चंचल खंजन नैन।
चारु चन्द्र सा इंदु मुख, लूट लियो सुख चैन॥

(19)

अश्रु जलन तड़पन मिलन, लिखे हुए हैं भाग्य।
भृङ्ग चुरा मकरन्द कलि, स्वाति बून्द सौभाग्य॥

(20)

अन्न दान सबसे बड़ा, दूजा न अन्य दान।
रखता सारे जगत को, जीवित अन्न महान॥

(21)

अविरल वारि प्रवाह से, पुल होता क्षति ग्रस्त।
बिन दुहराये जो कहा, होता मन्त्र निरस्त॥

(22)

अरि शर से है घातकी, निज की कड़वी बात।
कड़वी बातें मन चुभे, दे पीड़ा दिन रात॥

(23)

अलग जगत शृंगार हैं, वर्ण प्रकृति के साथ।
सोहे कर उत्सर्ग खुद, नित्य नवाये माथ॥

(24)

अर्थ बसे व्यापार में, अर्ध अर्थ कृषि कार्य।
आधी सेवा राज में, भीख न हो स्वीकार्य॥

(25)

अंबुद जल बरसात कहें, जीवन नीर समान।
मुक्ति हेतु मन चेत जा, लीन जीव प्रणिधान॥

(26)

अंबर प्रज्ञा का तना, शब्द शब्द को छान।
समझ सको तो समझ लो, गूढ़ ब्रह्म का ज्ञान॥

(27)

अंबर अम्बुद भ्रमित ज्यों, रोक रहा ज्यों भास।
सत्य शोध मानव जनित, अहं करे मन लास॥

(28)

अम्बर ध्वनि का प्रणव स्वर, ब्रह्म वेद का सार।
त्रिगुण विहित इस देह में, भरे अनेक विकार॥

(29)

अंतस धवल प्रभाव हो, समरस शिष्टाचार।
धुले हृदय कल्मष सभी, आवे नेक विचार॥

(30)

अंतस अँधियारा भरा, बिन तेरे कर्तार।
आकर दीपक बार दो, करो नेह उजियार।।

(31)

अज्ञानी को ज्ञान दे, ज्ञानी समझा पाय।
आधा ज्ञानी नासमझ, स्वयं श्रेष्ठ बताय॥

(32)

अन्धकार अज्ञान का, अंधे हुए तमाम।
चक्षु ज्ञान के खोलते, गुरुवर तुम्हें प्रणाम॥

(33)

अच्छे गुण भर कर रखो, ढोंग से हो न लाभ।
घंटी की आवाज से, बिके न बाँझिन गाभ॥

(34)

आग धुएँ से है ढकी, ढके मुकुर को धूल।
गर्भ ढका है उल्व से, अज्ञान लोभ का मूल॥

(35)

आज हिल गयी क्यूँ धरा, क्यूँ सह न सकी कष्ट।
करें पापी पाप सदा, करते जीवन नष्ट॥

(36)

आश्रय दाता प्रभु नमन, भव सागर कर पार।
प्रकृति जीव निर्मित परम, भोगी तन को तार॥

(37)

आदिशक्ति जगदम्बिका, मातु शरण तब इंदु।
दयादृष्टि अब डाल दो, सिन्धु तुम्हीं, मैं बिंदु॥

(38)

आत्म ज्ञान तो दे रहा, हमें प्रकृति का मंत्र।
अपने में ही सब छिपा, यह ही है संयंत्र॥

(39)

आनदकर्ता दुखहरण, चरण धरूँ मैं माथ।
जग की आ विपदा हरो, मंगलकारी नाथ॥

(40)

आकर धरा त्रिलोकपति, लीला करते खास।
जूठी छाछ लपेट मुख, रीत प्रीत की आस॥

(41)

आग धुएं से है ढकी, ढके मुकुर को धूल।
है गर्भ ढका उल्व से, ज्ञान लोभ का मूल॥

(42)

आभासी संसार में, खोया है इंसान।
जीवन बीता जा रहा, सोया लंबी तान॥

(43)

आंसू मेरे जब बहें, उतरे अंतस आय।
डूब प्रीत में मैं चली, नैनों के जल माय॥

(44)

ओम नाद सी शांतिमय, शिव डमरू झंकार।
सुर कान्हा के वेणु सा, खट्टा मीठा प्यार॥

(45)

औरों पर निर्भर रहे, दुख है यही विशाल।
स्व-निर्भरता की खुशी, सब कुछ रख संभाल॥

(46)

इक माटी बरतन कई, गहने कई प्रकार।
दूध वही गायें कई, प्रभु के रूप हज़ार॥

(47)

इस मूरख पर कर कृपा, किया प्रभो उपकार।
मिली दया गुरु देव की, हुआ परम से प्यार॥

(48)

इन्हें बनाओ आप बस, अपने रिश्तेदार।
मात सत्य व पिता धर्म, और क्षमा को यार॥

(49)

ईष्ट भूयिष्ट यज्ञपति, वर दायक बलनिष्ट।
कृष्ण जगत गुरु को नमन, त्रिभुवन नाथ बलिष्ठ॥

(50)

ईर्ष्या मकड़ी फँस गयी, खुद ही खुद के जाल।
औरों का सुख देखकर, उसकी जलती खाल।।

(51)

उजली उजली भोर है, उजला ही आकाश।
काली बदरी साफ कर, लाओ हृदय प्रकाश॥

(52)

उतना संचय कीजिये, जिससे पोषण पाय।
अधिक न लें अधिकार सा, यह अपराध कहाय॥

(53)

उडुगन प्रद्युत आत्म है, क्षणिक सौम्य हर बार।
लोहित भास्कर सा लुप्त है, नश्वर ये संसार॥

(54)

उमंग तरंग रचित मन, पुलकित हुलसित देह।
नवल किशोर नवल सदा, नवल बरसती नेह॥

(55)

उदित भानु नूतन हुआ, व्योम नाद का हर्ष।
ढोल बजा खुशियाँ मना, कर जीवन उत्कर्ष॥

(56)

उष्मित आतप भानु का, प्रबल पिघलता प्यार।
विरही व्याकुल प्रेयसी, दो धारी तलवार॥

(57)

एक सहारा ईश का, वे ही सुख के सार।
सदा सँभाले कष्ट में, प्रभु के हाथ हजार।।

(58)

ऐसे पर उपदेश दे, ज्यूँ सब पंडित होय।
विरला कोई जन यहाँ, निज को रहा बिलोय॥

(59)

कल किसका क्या हाल हो, जाने ना इंसान।
कल के कारज आज ही, कर लेते मतिवान॥

(60)

करो अथक प्रयत्न सदा, मन में यदि लो सोच।
होंगे पूर्ण कार्य तभी, करना मत संकोच॥

(61)

कदे न कोई है सगो, जग की याही रीत।
क्यों कोसे सुत की वधू, नहीं देह भी मीत॥

(62)

करते जो सद्कर्म को, सोते चैन से रोज।
मरने पर सद्गति मिले, जीवन में हो ओज॥

(63)

करिए रक्षा यत्न से, सदाचार की आन।
धन तो टिकता है नहीं, सदाचार धन जान॥

(64)

कभी रात तो दिन कभी, पास कभी तो फेल।
जीवन गति यूँ ही रहे, चले नियति का खेल॥

(65)

कष्ट देह की लीलता, मन विचलित है नाथ।
शरण मुझे आ शीघ्र लो, धर दो सिर पर हाथ॥

(66)

कमल नयन ये रस भरे, तीखी इनकी मार।
नटवर नागर मोहती, बंसी जादू डार॥

(67)

कहे अरुणिमा चीरती, कब बरसोगे मेह।
थकी जोहते बाट अब, जल जल बुझती देह॥

(68)

करते हो प्रिय कर्म तुम, मन का कहना मान।
किया अगर मन का मनन, लक्ष्य पास ही जान॥

(69)

कष्ट हरो गोपाल जी, संकट में जग प्राण।
हाथ सुदर्शन धार लो, करो विश्व का त्राण॥

(70)

कष्ट हरे प्रभु सबहि के, मानुष पशु नर नार।
कीन्हीं बहुत गलती पतित, तू अब इसे सुधार॥

(71)

कष्ट दुःख भय सब हरे, स्मरण कर प्रभु आज।
हरे देह की वेदना, नानक नाम जहाज॥

(72)

करती प्रवाह भावना, लेकर प्रभु का रंग।
छूट गया तब मोह का, मायावी यह संग॥

(73)

कतरा कतरा रक्त का, सब कुछ है कुर्बान।
ऐ मेरे प्यारे वतन, दे दूं तुझ पर जान॥

(74)

कतरा कतरा रक्त का, भेज रहा मीराज।
बम की बरसा हो गयी, क्या बोले वे आज॥

(75)

कतरा कतरा खून का, करता करुण पुकार।
शत्रु दमन की चाह में, वीर भरे हुंकार॥

(76)

कविता तो ऐसी जली, शब्द हुए सब खाक।
कल्पना भाव रो दिए, गीत सुनाये राख॥

(77)

कष्ट पतित पावन हरो, शरण पड़ा मैं नाथ।
कृपा सिंधु हरि आप तो, रख दो सिर पर हाथ॥

(78)

कष्ट हरे प्रभु सबहि के, मानुष पशु नर नार।
किन्हीं बहुत गलती पतित, तू अब इसे सुधार॥

(79)

कथा कान्ह की बोलती, सपने बीती बात।
ग्वाल गोपियाँ मन वचन, जपे श्याम दिन रात॥

(80)

करते जो भी कर्म तुम, बातें मन की मान।
कर अचेत मन का मनन, लक्ष्य नजदीक है जान॥

(81)

करे कामना लालसा, तन मन सबको रुष्ट।
आत्म शक्ति कमजोर हो, मन हो जाता दुष्ट॥

(82)

करे न आदर जो कभी, करे न गुरु का मान।
मद में भर घूमे सदा, वे नर मृदा समान॥

(83)

कर्म करें पूजा सरिस, फल में नहि अधिकार।
फल में नहि आसक्ति हो, मिले वही स्वीकार॥

(84)

कर्म वचन मन से रहें, सज्जन एक समान।
सदा धूर्त चालाक के, बदलते नित्य प्रमान॥

(85)

कर्तव्य पालन धर्म है, दे न सहारा भाग्य।
यत्न कठोर न सिद्ध हो, न तुम्हारा दुर्भाग्य॥

(८६)

कड़े शब्द से मित्रता, होती वहीं समाप्त।
करे पराजित भीरु को, एक शब्द पर्याप्त॥

(८७)

कलियुग में यह आम है, बात बड़ी गंभीर।
देख तरक्की शिष्य की, गुरु को होती पीर॥

(८८)

केवल एक नहीं करे, जग के सारे काम।
सूर्य व्यर्थ है रश्मि बिन, बिना साथ यश धाम॥

(८९)

कैसे हो बिन बुद्धि बल, सामर्थ्य वहीं जहँ बुद्धि।
सिंह हिरण प्रचलित कथा, लगा डुबोया बुद्धि॥

(९०)

कितने भी काबिल रहो, मित्र जरूरी जान।
कभी अंकुरित क्या हुआ, भूमी के बिन धान॥

(91)

कितनी विचित्र आस है, डाले अचरज माय।
बंधन में सब दौड़ते, मुक्त पंगु हो जाय॥

(92)

काल जहाँ विपरीत हो, शत्रु बैठता स्कंध।
अनुकूल जब हो समय, फैले स्वयं सुगंध॥

(93)

काल हरे जो बुद्धि को, बिना चलाए शस्त्र।
ज्ञान हरे बल काल का, सबसे तगड़ा अस्त्र॥

(94)

कार्य न करने योग्य हो, मत झोंको तब प्राण।
योग्य कार्य में प्राण दे, कर्तव्य इसे ही मान॥

(95)

काजल शिखर विराजती, कुलदेवी माँ जीण।
अर्चन वंदन कीजिये, कष्ट करें माँ क्षीण॥

(96)

काम क्रोध मद दूर हों, लोभ मोह का त्याग।
प्रभु इस नूतन वर्ष में, धरूँ पूर्ण वीतराग॥

(97)

काम क्रोध मद लोभ की, देह बनी है खान।
राम नाम सुमिरन बिना, कभी न हो उत्थान॥

(98)

कामदेव की मार से, बचकर रहा न कोय।
साधू मनुष्य देव मुनि, फंसे जो भी होय॥

(99)

काट पेड़ लूटी धरा, मेटी उसकी शान।
हरा भरा जीवन लुटा, खोया भावी जान॥

(100)

काची माटी से बनी, काची तेरी देह।
करम सफल तेरे हुए, ईश्वर से कर नेह॥

(101)

कालिंदी तीरे बजी, वेणु श्याम की सन्त।
दस्तक दे बोली पवन, स्वागत करो वसंत॥

(102)

कुंज गली भाये नहीं, मैं तो चाहूँ श्याम।
उन बिन मुझको नहि मिले, तनिक चैन आराम॥

(103)

कंज चक्षु अमृत हृदय, मन में सतत सुवास।
गगन कूप बन स्नान कर, ज्ञान ध्यान विश्वास॥

(104)

काँच पहन लो शीश पर, या पावों में रत्न।
काँच काँच कहलायगा, मणि कहाय मणिरत्न॥

(105)

कोयल को मद है नहीं, मधुर आम फल पाय।
मेढ़क कूदे हर्ष से, कीचड़ पानी माय॥

(106)

क्रोध न तन आये कभी, सदा रहे मन ध्यान।
बोल बेतुके बोलकर, करते निज नुकसान॥

(107)

क्रोद्ध अहम तज दीजिये, करे बुद्धि का नाश।
पाने को है कुछ नहीं, होवे देह विनाश॥

(108)

कौन सुझाए रास्ता, मग में तिमिर अपार।
आकर तुम अब थाम लो, मेरे तारनहार॥

(109)

कैसी अजब विडम्बना, तेरी हे भगवान।
अन्न हमें जो दे रहा, मरता वही किसान॥

(110)

कैसा सृष्टि विकास है, समझो दशावतार।
जलचर से प्राणी बढ़ा, श्रेष्ठ बुद्धि अनुसार॥

(111)

कृष्ण लाल मथुरा गए, बृज पर घिरा अनंग।
गोपी गीत अध्यात्म को, भूले गोपी संग॥

(112)

कृष्ण कल्प सोलह कला, शरद चन्द्र वेदांत।
भ्रमित भ्रमर मकरंद पा, चित्त करे है शांत॥

(113)

कृपा दयानिधि अब करो, हरो कष्ट सब आय।
प्रेम भक्ति अर्पित करूँ, लो निज चरणों माय॥

(114)

कृपा दया प्रभु की मिले, करो निरंतर जाप।
महिमा है प्रभु नाम की, कट जाये सब पाप॥

(115)

कृपा उपकार गुरु करे, योग्य पात्र है मान।
कारज ऐसो तुम करो, बढ़े सदा गुरु शान॥

(116)

कुटिल मनुज की कुटिलता, किस विधि रोकी जाय।
लाख जतन चाहे करो, वो उत्पात मचाय॥

(117)

कुमति सुमति हो गुरु मिले, गुरु तो पावन ग्रन्थ।
मार्ग बतावें गुरु सतत, चल मनवा उस पंथ॥

(118)

कुंचित अलकें चारु मुख, मोर मुकुट है भाल।
कटि किंकिनि केयूर मणि, मधुर बाल गोपाल॥

(119)

कुटिल करे अपराध को, दुर्बुद्धि घन पाश।
अनुभव करे महान वो, निश्चित जानि विनाश॥

(120)

किस विध मैं पूजा करूँ, हिरदय बैठा श्याम।
नैनन निकसत नीर है, याद करूँ हर याम॥

(121)

कीरति कंचन कामिनी, इन से बचियो यार।
छमछम करती सिर चढ़े, करतीं बंटाधार॥

(122)

खर्च करे सच बोल कर, गुण वर्धक ही खाय।
इन्द्रिय पर संयम रखे, नींद चैन की आय॥

(123)

खेवनहार छिपा कहाँ, नाव फँसी मझधार।
पतित पावन बना फिरे, मुझ पापी को तार॥

(124)

खोल मनस की अर्गला, चित्त करो प्रभु शुद्ध।
एक विरत रेखा बना, जीवन करो प्रबुद्ध॥

(125)

गगन घटा काली रहे, रहे चित अवसाद।
कष्ट हरे प्रभु जी सदा, हो जीवन आल्हाद॥

(126)

गहन जलद आषाढ़ के, गरज गिरे जल धार।
प्रभु विचलित मन शांत कर, जग में कष्ट अपार॥

(127)

गर भाग्य करे काम है, तो क्यूँ करता काम।
सत स्नान दान धर्म ही, देंगे शुभ अंजाम॥

(128)

गुण निधान श्री राम प्रभु, करते हैं कल्यान।
घट घट में रह सींचते, प्रेम सुधा रस जान॥

(129)

गुण मन्दिर के देवता, हृदय सुमन मकरन्द।
शरणागत हूँ आपके, मिला सच्चिदानन्द॥

(130)

गुरुसेवा धन से किये, मिले कहाँ से ज्ञान।
बिका ज्ञान विनिमय कभी, फलित न हो यह मान॥

(131)

गुण नहि जाने विज्ञ के, विद्या से क्या लाभ।
बंजर धरती क्या फले, हल चलाय दिन रात॥

(132)

गुण को ज्ञानी जानता, ज्यों मधुकरी सरोज।
मेढ़क कमल तलाब में, फिर भी न मिले रोज॥

(133)

गर्म तवे पर बूंद भी, झट उड़ जाती जाय।
वही बूंद जल, कमल पर, मोती सम झलकाय॥

(134)

गिरकर जल आकाश से, नदियों में मिल जाय।
नमन करो जब ईश को, सुख सागर लहराय॥

(135)

गौवें नाना रंग की, होता दूध सफेद।
धर्म ग्रन्थ कहते सभी, एक तत्व के भेद॥

(136)

गिरिधारी समझा रहे, आज प्रकृति का सार।
पञ्च तत्व से तन बना, पञ्च तत्व आधार॥

(137)

घर घर पहुंचे आज हैं, तुलसी तेरे राम।
राम नाम का मंत्र ही, देता है विश्राम॥

(138)

घर घर पहुंचे आज हैं, मेरे हिय के राम।
आँख मूंद दर्शन करो, जपो निरंतर नाम॥

(139)

घर की नार न साधवी, कहे न मीठी वान।
घर वह जंगल सा लगे, घर वन एक समान॥

(140)

घन घमंड कर बरसते, शचिपति का है कोप।
बृज संकट कर दूर प्रभु, करते अहं विलोप॥

(141)

घायल करते श्याम के, तीखे तीखे नैन।
उलझ ज्योंहि इनमें गया, चित्त हुआ बेचैन॥

(142)

घोर व्यथा कलयुग कहे, हृदय न पावे चैन।
इंदु शरण ले लो प्रभो, कहते आतुर नैन॥

(143)

चपल सांवरा मनहरण, सस्मित आनंद कंद।
बैठ हृदय किसलय पिये, कृष्ण मधुप मकरंद॥

(144)

चक्र अनाहत मन फँसा, मैया दो विश्राम।
अमृत कलश मन वास दो, शुभ हो मेरे काम॥

(145)

चली जायगी देह यह, रह जायेगा मान।
सूर्य चन्द्र सा रख इसे, अधिक प्राण से जान॥

(146)

चन्द्र वृहस्पति सूर्य शनि, मंगल राहू केतु।
बुद्ध शुक्र ग्रह ये रहें, कर्म मनुज के सेतु॥

(147)

चंदा की वो चांदनी, सूरज का ये तेज़।
दोनों तुझमें व्याप्त हैं, रखती नेह सहेज॥

(148)

चले संग ले जगतपति, वासुदेव महाराज।
जग के मंगल मोद हित, करें सकल प्रभु काज॥

(149)

चले सभी जब साथ में, मन बुद्धि और बोल।
देवों के सम ही बने, नर चरित्र अनमोल॥

(150)

चातक मुँह में कब गिरे, स्वाति नीर की धार।
जलदि दोष कैसे कहूँ, विधना जाय न टार॥

(151)

चाहे सोये भूमि पर, या हो ठाठ पलंग।
साग भात खा कर रहे, सुख दुख करे न तंग॥

(152)

चारू सुलोचन गोल से, अद्भुत अंग त्रिभंग।
लट लटके ज्यों चंद्र मुख, लगे सुमन अलि सङ्ग॥

(153)

चारू लोचन लोल से, त्रिभंग अद्भुत अंग।
लट लटके चंद्र मुख, मत्त मधुप अलि सङ्ग॥

(154)

चारु चरण हैं कमल से, पकड़ रखूं दिन रात।
कृपा करो आ सांवरे, दीनन के हो तात॥

(155)

चिता व चिंता एक से, दोनों देह जलाय।
चिंतन कर ये दूर हों, मन अशांति चलि जाय॥

(156)

चिदाकाश मन हो सदा, सत्य मार्ग परमार्थ।
ईश मिलन को मैं चला, सांध्य अर्घ्य दे नाथ॥

(157)

चित्त विमल कर हे प्रभु, मनन करूँ मैं नाथ।
भय शंका मिट जाय अब, हो प्रभु तेरा साथ॥

(158)

चित्रकार के चित्र सी, हुई नार निस्पंद।
नैन खुले से रह गए, ढूंढे यदुकुल चंद॥

(159)

चिंतित करती वेदना, हृदय लगा आघात।
नाथ मुक्त कर दो मुझे, प्रार्थना करूँ तात॥

(160)

चिंता कर निज धर्म की, भोजन चिंता छोड़।
भोजन भी आया तभी, हुआ जन्म का जोड़॥

(161)

चींटी चले हज़ार डग, चलना जीवन मान।
चले गरुड़ नहि एक पग, नहि छोड़े निज स्थान॥

(162)

चित्त धीर प्रज्ञान ही, ध्यान ज्ञान का पथ्य।
मोती रूपी ज्ञान को, पाने का कर लक्ष्य॥

(163)

छवि मोहक अनमोल माँ, हिमाद्रि धवल तुषार।
ज्ञान विभूषित देव है, ओज तप्त कंचार॥

(164)

छोड़ त्रिगुण माया प्रभो, स्थिर कर मेरा चित्त।
प्राण मात्र तन में रहें, सेवा भाव निमित्त॥

(165)

छोड़ पिंजरा देह का, जाएगा उस देश।
माया ठगनी है छले, रहे न कुछ भी शेष॥

(166)

छांड़ि भेद उचनीच को, भूल्यो तन को क्लेश।
हरि सँग नाच्यो मन मगन, छांट्यो मन को द्वेष॥

(167)

जयति वेदविद विमल शुभ, जयति कर्म गुण काल।
जयति भानुकुल मुकुटमणि, जय अंजनि के लाल॥

(168)

जयति कृष्ण कान्हा हरे, जयति मुरलि धर श्याम।
जयति कन्हैया माधवा, जय पावन बृज धाम॥

(169)

जनम मरण सब आप से, आप जगत के नाथ।
शरण तरण तेरी पड़ा, सर पर धर दो हाथ॥

(170)

जनम मरण की धार में, बहता रहता जीव।
अपना ले प्रभु नाम तू, मोक्ष सुधा फिर पीव॥

(171)

जन्म मृत्यु के चक्र में, पुनर्जन्म सब पाय।
गौरव बढ़ता वंश का, सार्थक जन्म कहाय॥

(172)

जग में तुम सा है नहीं, कोई तारणहार।
प्रभु बिन बोले, बिन कहे, करते बेड़ा पार॥

(173)

जग स्वामी की प्रेरणा, अद्‌भुत आशीर्वाद।
कृपा बनी हो आपकी, सुन ले अंतर्नाद॥

(174)

जगत जननि संकट हरणि, सकल सफल शुभ काज।
मात भवानी मन बसी, तब प्रतीति है आज॥

(175)

जहर भरी यह देह है, लिपटे पांच विकार।
पँचदोषी काया रची, हरो दोष सरकार॥

(176)

जल बिन जीवन स्वप्न सा, मृग मरीचिका जान।
टूटा सपना खो गए, प्यासे प्यासे प्राण॥

(177)

जला कुबुद्धि की वर्तिका, भक्ति भाव को तेल।
अंधकार उर को कटे, सुरभित अमृत बेल॥

(178)

जग परिवर्तन शील है, जन्म मृत्यु का कष्ट।
अमर कहाते हैं वही, वंश करे उत्कृष्ट॥

(179)

जहर बिच्छु का पूंछ में, मधुमक्खी का माथ।
गरल सर्प का दंश में, दुर्जन का तन साथ॥

(180)

जब न अतिथि सत्कार हो, भृकुटी तनी विचित्र।
मित्र भाव मन छुब्ध हों, रहते चाहे मित्र॥

(181)

जीते पांडव कृष्ण से, जहँ प्रभू तहँ धर्म।
परम सत्य है यह जगत, धर्म विजय का मर्म॥

(182)

जो करना है कीजिये, फैल न जाए बात।
जान गए यदि लोग तो, कार्य न फलने पात॥

(183)

जोड़ जाड़ जोड़े जुगत, ज्यों जड़ जाहि जुगाड़।
कभी कभी क्यों काम का, कोई करे कबाड़॥

(184)

जड़ता के ताले खुलें, जहां रहें प्रभु आय।
ज्यूँ ही माया आय तो, स्मृति ज्ञान की जाय॥

(185)

जान मित्र गुणहीन है, तो भी है वह मित्र।
शत्रु मिले गुणवान भी, फिर भी है अपवित्र॥

(186)

जांचे नही स्व-दोष को, गिने अन्य के दोष।
मानव हृदय अजीब है, खुद में है मदहोश॥

(187)

जागो निंद्रा से सखे, तोड़ मोह का जाल।
माया ठगनी ठग रही, कब आ जाये काल॥

(188)

जादू कीन्ही सांवरो, नजर नजर में श्याम।
मंत्र फूँक जड़वत करत, ढूंढू चारों याम॥

(189)

जैसी संगत आपकी, वैसे आवें भाव।
ध्यान भजन नित कीजिये, प्रभु का मिले प्रभाव॥

(190)

जीवन संचित कर चला, करूँ भंग मैं गर्व।
सत्य धार लूँ प्राण मैं, हृदय मनाऊँ पर्व॥

(191)

जीवन नैया डोलती, प्रभु दे दो आधार।
बार बार संभाल लो, नाथ सिंधु दो तार॥

(192)

जीवन नैया खींचते, हम तुम मिल जुल बांट।
सुख साधन को जोड़कर, दुख देंगे हम छाँट॥

(193)

जीवन है काटों भरा, मुस्काता अनुकूल
इस उपवन में साथ हैं, सुख दुख के दो फूल

(194)

जीवन तो नदिया विरत, इसके प्रवाह पांच।
पर्वत नालों से निकल, बहे नदी बिन आंच॥

(195)

जीवन ने ठोकर दई, हुयो जनम बर्बाद।
निरत सतत आंसू बहत, ईश करूँ मैं याद॥

(196)

जीवन तो मृग सा बना, ढूँढे नित निज गंध।
कस्तूरी की चाह में, तोड़ दिए संबंध॥

(197)

जीवन तो उस वृक्ष सम, जो ढूँढ़े निज गंध।
खोजत तो पावत नहीं, तोड़े सब संबंध॥

(198)

जीव विकारी जग बना, भरे मैल मन बांध।
राम पतित पावन सदा, शुद्ध चित्त से साथ॥

(199)

जीर्ण शीर्ण तन मन हुआ, ऐसा लगा वियोग।
श्याम बावरे शांत कर, लागा मन का रोग॥

(200)

जिसे धर्म का ज्ञान है, छोड़े नहीं सुमार्ग।
संत निवृत न हो सके, चुनता नही कुमार्ग॥

(201)

जिज्ञाषा अरु बुद्धि से, दूर रहे अज्ञान।
निश्चित कर क्या चाहिए, आत्मबोध को जान॥

(202)

जिज्ञासु है ज्ञान की, मन में उठे तरंग।
ओम नाद होता रहे, मिले ब्रह्म का संग॥

(203)

जितना हो मुश्किल समर, उतनी मोटी जीत।
खूब वाह वाही मिले, खाने को नवनीत॥

(204)

ज्योत प्रीत की जब जगी, आई जीवन आस।
सद्गुरु तेरी शरण आ, आया उसके पास॥

(205)

ज्योति प्रीत की जब जगी, आई जीवन आस।
सद्गुरु की पा कर शरण, आया उसके पास॥

(206)

झांक नयन में देख तू, तुझे मिलेंगे श्याम।
मन तो मेरा बावरा, नाचे ले ले नाम॥

(207)

झूम झूम जप ऐ जगत, अपने प्रभु का नाम।
शब्द प्रीत के जो कहे, बन जाएंगे काम॥

(208)

टपका कल्मष रात भर, आई उजली भोर।
भर पियूष की आंजरी, मन में उठे हिलोर॥

(209)

टेसू पलाश महकते, आया मस्त बसंत।
होली होली सब करें, है हुड़दंग अनंत॥

(210)

टालो ऐसे काम को, लेनी पड़े सहाय।
स्व-सामर्थ्य से ही करें, शीघ्र काम बन जाय॥

(211)

ठुमक ठुमक पग हरि चलें, देखि यशोदा मात।
लाख बलैया ले रही, लीला करते नाथ॥

(212)

डूबा दानी कर्ण बन, रावण ध्वस्त शिकार।
दुर्योधन था लालची, अति करता हर बार॥

(213)

तमसो मा ज्योर्तिगमय, देहि मात धन धान्य।
दीपज्योति स्थापित हृदय, सर्व जगत में मान्य॥

(214)

तड़पत जियरा आपणा, विरह अगन तन संग।
फागण जैसी मैं जली, छोड़त नहीं अनंग॥

(215)

तप कर अंतस अग्नि में, मिला कनक सम भास।
तन मन धन की शुद्धि हो, कुविचारों का नास॥

(216)

तन धन बल को दंभ तो, क्षिणभर में छिन जाय।
अहम् रहे सारो धरो, यम जब दंड चलाय॥

(217)

तत्व ज्ञान जो जानते, उनमें प्रभु का वास।
निंदा घृणा न द्वेष हो, ब्रह्म रहे हर सांस॥

(218)

तप्त स्वर्ण सी देह है, शास्त्र निपुण प्रभु विज्ञ।
श्याम कांति शतदल नयन, चरण शरण अनभिज्ञ॥

(219)

तप्त अनल सा है विरह, जल जल करती राख।
मोहन मथुरा क्या गए, ब्रज ज्यूँ सूखी शाख॥

(220)

तत्व ज्ञान तू जान ले, रहें राम जी पास।
घृणा द्वेष निंदा नहीं, होगा ब्रह्म प्रभास।।

(221)

तत्व ज्ञान जो जानते, उनके मन प्रभु वास।
घृणा द्वेष निंदा न हो, रहे ब्रह्म हर सांस॥

(222)

तेरा छोटा कार्य भी, सही समय उपकार।
गलत समय का कार्य भी, कहलाता बेकार॥

(223)

ताल तलैया पंक बिन, सभा बिना खल दीन।
काव्य बिना कटुशब्द के, मनुज वासना हीन॥

(224)

ताप हरे जीवन भरे, पावन विग्रह रूप।
कितनी ही हो आपदा, रक्षक मात स्वरूप॥

(225)

तीन ताप दुःख दें सदा, इन पर नहि अधिकार।
दुख हरता है एक वह, शरण मिले फल चार॥

(226)

तीन भाँति के लोग हैं, जग में पाते मान।
उत्तम मानें मान तो, दूसर तिसर धन जान॥

(227)

तुझ बिन दम निकले नहीं, तू ही मेरे प्राण।
नाम रात दिन मैं जपूँ, कर कान्हा कल्याण।

(228)

तुम बिन विरहन मैं जलूँ, निकस रहे हैं प्राण।
नटवर नागर तुम गए, कैसे हो कल्याण॥

(229)

तुलसी सुर की भक्ति का, मातृ भाव उद्‌गार।
मीरा के हैं मधुर पद, माँ ममता का भार॥

(230)

तृषित तुषार तुहिन तट, तरणि तके उद्वेग।
मन मोहित मुस्कान से, मर्यादित मन वेग॥

(231)

तिरछी चितवन चंचला, चपल कटीले नैन।
बैठ श्याम मुस्का रहा, मीठे मादक बैन॥

(232)

तुम्ही नियंता नित विरत, तुम ही पालनहार।
पंच तत्व की हो प्रकृति, तुम्ही करो भव पार॥

(233)

तुम्ही नियन्ता नित विरत, तुम ही जग कर्तार।
पंच तत्व की प्रकृति हो, तम्ही करो भव पार॥

(234)

थारी विनती मैं करूँ, हाथ जोड़ प्रभु श्याम।
किरपा राखवा थे सदा, रटु जपु थारो नाम॥

(235)

दमन क्रोध का कर सदा, बोल बुद्धि अनुसार।
करे कार्य परमार्थ का, कहलाये हुसियार॥

(236)

दशा देख इस जगत की, हिरदय उठती खीस
द्वेष क्लेश से यह भरी, नाथ मिटाओ टीस

(237)

दया कृपा के धाम हैं, सहज सरल हैं राम।
जपो राम का नाम रे, राम नाम सुख धाम॥

(238)

दमन क्रोध का कर सदा, बोल बुद्धि अनुसार।
करे कार्य परमार्थ जो, कहलाय समझदार॥

(239)

दुष्ट अधर्मी व्यक्ति की, ऐसे मिटे साख।
करनी से घायल करे, अविलम्ब दूर राख॥

(240)

दुष्ट मनुज तो ढूँढ़ता, सब में राई दोष।
महादोष निज का कभी, रहे न उसकी होश॥

(241)

दुःख देता न अन्य को, बिना विकृति के संग।
न तोड़े सम्बन्ध कभी, कहता धर्म प्रसंग॥

(242)

दुग्ध पिलाया सांप को, बढ़े जहर है मात्र।
जाहिल को समझायगा, क्रोधित हो दिन रात्र॥

(243)

दुर्जन ले सौगंध भी, लिखा नीर पर जान।
संतन वाणी सहज भी, शिलालेख सम मान॥

(244)

दूजों को दुख बाँटना, बने धर्म अवमान।
चैन न क्षण भर पा सके, खुद मोले अपमान॥

(245)

देने पर उपदेश तो, ज्ञानी होते लोग।
ज्ञानी, अज्ञानी रहे, जभी रहा निज भोग॥

(246)

दे दे कह कर माँगते, छोड़ देव तन पांच।
ही स्थित बुद्धि शर्म रमा, कांति कीर्ति औ सांच॥

(247)

देखो ऊंट विवाह में, गधे गा रहे गान।
एक दूजे का कर रहे, ऊँचे स्वर गुणगान॥

(248)

दो मत उतनी वेदना, लगे देह में तीर।
कटुक वचन देता हमें, उतनी ज्यादा पीर॥

(249)

दुखियों की सेवा करे, या कर विधिवत यज्ञ।
दोनों कारज एक से, पुण्य देत सम्रज्ञ॥

(250)

देह गेह का नेह तो, छूट गया पा स्नेह।
लख चौरासी काट दे, अँखियन बरसे मेह॥

(251)

देह नेह का मोह ही, विकल करे दिन रात।
जप ले मनवा राम को, कटें कष्ट अज्ञात॥

(252)

देह छलकती दुर्दशा, इंदु नयन के नीर।
आत्मा परमात्मा विरत, शून्य सहज ऋत धीर॥

(253)

दर्द समेटे जाइये, दिल को बना विशाल।
यही दर्द ही शक्ति है, रखना इसे संभाल॥

(254)

दिवस प्राण की संपदा, जीवन शक्ति प्रदीप्त।
कृष्ण शुक्ल विधिना करे, मनस भक्ति से सिक्त॥

(255)

देखि रूप ब्रजराज का, नयन खुले रह जाय।
कान्ति बदन की कह रही, इसमें सृष्टि समाय॥

(256)

दो घर बेटी तारती, पुत्र घर का चिराग।
शायद बेटा पुष्प है, तनुजा बने पराग॥

(257)

दौलत अरु शोहरत कभी, जायेगी नहि साथ।
दान करे सामर्थ्य भर, जान न पाये हाथ।।

(258)

दुनिया प्यारे मोह की, जाना है उस पार।
साथ कर्म तेरे रहें, कर ले निज उद्धार॥

(259)

दुर्भिक्ष हरे हरित कृषि, हरे पाप प्रभु जाप।
मिटे मौन से द्वन्द सब, जाग्रति से भय-ताप॥

(260)

दिन रवि से निशि इंदु से, होता आभावान।
त्रिलोकी सद्धर्म से, कुल सपूत से मान॥

(261)

दीप जला मुस्कान का, गा ले जीवन गान।
जीवन में संतोष से, आती खुद मुस्कान॥

(262)

दीर्घ आयु मिलती सदा, दोष स्वयं का निहार।
उत्तम संतति ऋद्धि है, करे मृदुल व्यवहार॥

(263)

धवल चंद्र की कुमुदिनी, भरती ज्यों उल्लास।
मन मोहन तू सांवरे, लाता नूतन आस॥

(264)

धर्म कभी ना तोड़ता, जगत प्रीत व्योहार।
करे मनुज खुद ही खड़ी, नफ़रत की दीवार॥

(265)

धर्म पाप से हारता, हारे सच से झूठ।
यह निश्चय है राज में, तुम्हें मिलेगा ठूठ॥

(266)

धन व्यय के पथ तीन हैं, भोग दान धर्मार्थ।
दान भोग करता नहीं, खल खर्चे निज स्वार्थ॥

(267)

धर्म प्रवृत्त जो रहे, पर वधु माने मात।
पर-धन माटी मानते, जीव वे संत जमात॥

(268)

धर्म दान विधा सदा, धीरे संचित होय।
बूँद बूँद घट तो भरे, धैर्य धरो सब कोय॥

(269)

धर्म उलट मत त्यागिये, प्रवण मिले संपत्ति।
त्याग न अनुचित धर्म को, लाये धर्म विपत्ति॥

(270)

धैर्य नष्ट हो शोक से, ज्ञान हरे हर शोक।
शोक हरे सर्वस्व को, यह अरि सके न रोक॥

(271)

धूप छांव आती डगर, मत ना तू घबराय।
सांझ चले शीतल पवन, दुख सारे मिट जाय॥

(272)

धरी शान शौकत रहे, धरा रहे अभिमान।
इक दिन माटी में मिले, तू क्यों करे गुमान॥

(273)

धृतिज्ञ उद्यमशील को, मिलता है धन धान्य।
प्रारब्ध रहे देखते, जग में विफल अमान्य॥

(274)

धानी धरा दहक रही, कहँ बसंती फाग।
अपने अपने खोल में, अपनी ढपली राग॥

(275)

धीरे मिलता रास्ता, पंछी वन मँडराय।
ज्ञान मिले नित पाठ से, गिरि पर चढ़ता जाय॥

(276)

नयन नीर बरसत सखी, तड़पत मन दिन रैन।
कृष्ण प्रेम में बांवरी, किस विध पाऊँ चैन॥

(277)

नयन कटोरा जल भरा, देखूं उसमे झांक।
पीड़ा ही पीड़ा मिली, हुआ हृदय बहु फांक।।

(278)

नयन कटोरा भींग कर, बरसा विरहा नीर।
जल न सकी मैं बावरी, बुझी न मन की पीर॥

(279)

नयन नयन से यह कहे, अश्रु बहा मत व्यर्थ।
मोहन नैनो में बसे, निकलें वे न तदर्थ॥

(280)

नटखट तेरे नैन हैं, बलखाते ये केश।
दृष्टि इधर भी डाल दो, दया करो अखिलेश॥

(281)

नटवर नैनन में उलझ, अटके मेरे नैन।
पथ निहारत वो थकी, कहाँ मिले अब चैन॥

(282)

नटवर नागर मोहना, रास बिहारी श्याम।
तिरछी नजरों से करे, घायल सुबहो शाम॥

(283)

नमन अवधपति राम को, नाम अनेको साथ।
रामभद्र, रघुकुल तिलक, जगत रचयिता नाथ॥

(284)

नर केहरि नर श्रेष्ठ हो, निराकार तुम नाथ।
नरकासुर हन्ता नमन, करूँ मैं बारम्बार॥

(285)

नन्द महल पर रथ खड़ा, लेन आय अक्रूर।
सखियाँ सारी रो रही, हो कैसे दुख दूर॥

(286)

नंदलाल बस नैन में, नैनों को भटकाय।
नैन पलक में बन्द कर, रखते हैं ब्रजराय॥

(287)

नृप वह स्वान समान है, बदले नहीं स्वभाव।
खाता जूता है सदा, हर नर का ये भाव॥

(288)

नाथ दरस बिन क्या कहूँ, तरस रहे ये नैन।
ज्ञान सुधा रस पान दे, भजन करूँ दिन रैन॥

(289)

नाथ नाम जप आपका, कर देता भव पार।
कलि मल हरी आप हो, दुखिया ये संसार॥

(290)

नाथ सर्व व्यापी रहें, हों मन व्याप्त विशेष।
त्रिकाल दर्शी मात्र वे, जिनमें ब्रह्म निवेश॥

(291)

नारद जी ने तट नदी, देख अशोभित कार्य।
कुबेर सुत को शाप दे, सजा थी अपरिहार्य॥

(292)

नाशवान यह देह है, और चपल मन धार।
सुख दुख आते हैं यहाँ, लहर लहर जग सार॥

(293)

नेह नीर नैनन नहीं, नीचो कियो न माथ।
इंदु घणो पापी समझ, दया करो तुम नाथ॥

(294)

नेता रहता ठाठ से, तंबू में क्यों राम।
अगले बरस चुनाव हैं, जपले हरि का नाम॥

(295)

नैन निहारे राह अब, निशि दिन आठो याम।
तुम बिन रहना अब कठिन, कब लौटोगे श्याम॥

(296)

नैन नैन से कह रहे, मतवारे हैं नैन।
सुनी वेणु धुन उड़ चला, नैनों का यह चैन॥

(297)

नैन कटीले सांवरे, रम्य अलक बल खाय।
मुख सरसिज उगता अरुण, लोहित अधर लुभाय॥

(298)

नैन नीर पावस सरिस, बरसत है दिन रात।
भींग गया मन का पटल, ईश प्रेम बरसात॥

(299)

नैनो ने निरखा नहीं, नित नव नीर निपात।
जीर्ण जरा जाटिल्य ही, झकझोरे जज्बात।।

(300)

नैनन के मद नैन में, निन्दिया है मराल।
बाँको बाँके हो चलो, बांकी बांकी चाल॥

(301)

नैनन बस्यो है सांवरो, नाम जपूँ दिन रात।
मुरली सुन मन बावरो, ढूंढे प्रभु को साथ॥

(302)

नानी बाई को दिया, नरसि भक्त को मान।
भक्तों की तो लाज हो, दयालु कृपा निधान॥

(303)

नारी माता मानता, पर धन धूल समान।
खुद जीवों में विज्ञ है, निज गुण नहीं बखान॥

(304)

नहीं पितृ सम गुरु रहे, कैसे नाँवउँ माथ।
निज मन में श्रद्धा बिना, जुड़े कभी ना हाथ॥

(305)

निद्रा खाली बैठना, आलस्र मद अज्ञान।
गप चंचलता दोष हैं, विद्यार्थी के जान॥

(306)

निज अंतस की मूर्खता, सब दुख की जड़ मान।
विष, दुर्गति, मन-व्याधि सा, कोई दुख नहि जान॥

(307)

नित्य बढ़ी मन कामना, करती न अप्रसन्न।
सागर माय समाय ज्यूँ, नदियाँ शाँत प्रपन्न॥

(308)

निंदक अथवा आलसी, डरे जो बोलो सख्त।
खोज रहे संयोग को, धन गंवाय कमबख्त॥

(309)

निखरे संकट में मनुज, छोड़े मत निज भाव।
अनल संग संपर्क से, खुशबू कर्पूर पाव॥

(310)

निश्छल निर्मल मन सकल, प्रेम प्रीत अनुराग।
साजन व्याकुल कर रही, तुम बिन बिरहा आग॥

(311)

नित्य सर्व व्यापक प्रभो, प्रणव ओम के नाद।
कांति इंदु की आपसे, जग के सकल प्रसाद॥

(312)

निरत नीर नीरद नवल, दया प्रेम बरसात।
चित्त धवल शीतल करे, तृप्ति प्रीति जलआत॥

(313)

निकल देह आत्मा गयी, रहा नहीं अस्तित्व।
माटी माटी ही बची, अंत हुआ व्यक्तित्व॥

(314)

निराकार आत्मा परम, अगम अगोचर जान।
निरगुन नैनन तू बसा, अद्भुत दया निधान॥

(315)

निराकार निःस्पृह निरत, न सत न असत न द्वैत।
पुरुष प्रकृति परिणति प्रकट, धन्य मनुज अद्वैत॥

(316)

निर्मल मन को प्रभु बना, जलें प्रीत के दीप।
निरत करूँ सत्संग प्रभु, मुक्ता निकले सीप॥

(317)

नित्य सर्व व्यापक प्रभो, प्रणव ओम के नाद।
कांति इन्दु की आपमें, जग के सकल प्रसाद॥

(318)

निज मन बल दृढ़ होयगा, पाए धन संतोष।
बुझती पावक जल पड़े, करे क्षीण बल रोष॥

(319)

नीरव निर्मल नीर सा, नीरज नीर निपात।
रखिये सहेज नीर को, निर्भय नत निःस्वार्थ॥

(320)

नील निलय नीरव नयन, निर्भय निर्मल नाम।
नीर निःपतित नीलमणि, निराकार तू राम॥

(321)

नील देह नीरज नयन, छवि मन तेरी श्याम।
सर्वसुखन से मैं सजी, विरह वियोगी धाम॥

(322)

नीरद सम छवि श्याम की, मन्मथ भी शर्माय।
गोप गोपांगना सभी, नाच नाच इतराय॥

(323)

नीरस नीरव नीर है, बुझ्यो नैनन नीर।
अंतस भारी पीड़ है, अलग नीर सूं क्षीर॥

(324)

नीचे सरिता जल गिरे, लौट न ऊपर आय।
जैसे हो ढलती उमर, पल पल बीती जाय॥

(325)

न्यारी है लीला जगत, जकड़े मोह गुरूर।
जग के सम्मुख ला रही, जाऊँ जितना दूर॥

(326)

पथ प्रशस्त पाथेय बन, प्रणव प्रार्थना प्राण।
अर्चन अरु आराधना, अर्थ अनुरक्त त्राण॥

(327)

परमानंद को प्राप्त है, दो प्रकार के लोग।
बालक नन्हा एक तो, दुजा करे जो योग॥

(328)

पवन देव के पुत्र हो, वानर प्रमुख प्रवीर।
राम दूत अति प्रिय तुम, नमन साष्टांग वीर॥

(329)

पराधीन हो दुख मिले, हो स्वतंत्र सुख भान।
पाया जिसमे खुश रहे, सुख दुख एक समान॥

(330)

पहने कपड़े चीथड़े, या महंगे हों वस्त्र।
संतोषी नर का सदा, सुख दुख होय निरस्त्र॥

(331)

पक्षी दो पर से उड़े, ऊँचे नभ में धाय।
ज्ञान कर्म के पर लगा, मिले ब्रह्म से जाय॥

(332)

पत्ते न हो करीर में, क्या बसंत का दोष।
उलू दिन देखे नहीं, सूरज का क्या दोष॥

(333)

परमात्मा की हो कृपा, होय तब चमत्कार।
नाम जपो श्री राम का, होगा बेड़ा पार॥

(334)

पहला अक्षर साल का, लिखता मैं श्रीराम।
रामचन्द्र जी साधते, बिगड़े सारे काम॥

(335)

पञ्च तत्व से है बनी, स्थूल सूक्ष्म यह देह।
माटी से मिल बोलती, लगा न मुझसे नेह॥

(336)

पञ्च तत्व से तन रचा, पञ्च तत्व संसार।
पञ्च तत्व में खोज तू, रोगों के उपचार।

(337)

पञ्च तत्व से रचित तन, रक्खो इसे संभाल।
पञ्च तत्व में ही मिले, आत्म ज्ञान सब काल॥

(338)

पञ्च तत्व से तन रचा, पञ्च दोष भरपूर।
पञ्च तत्व में ही मिले, मन रख तू अक्रूर॥

(339)

परिवर्तन होता सतत, करो इसे स्वीकार।
जो सहर्ष स्वीकारता, मिलती उसे न हार॥

(340)

परम पिता दे दो मुझे, शक्ति भक्ति अरु बुद्धि।
लोभ क्रोध सब क्षीण हों, मन की कर दो शुद्धि॥

(341)

पंच तत्व की देह है, जग में पांच विकार।
मानव तन अनमोल है, जीवन का यह सार॥

(342)

पंख बिना मैं उड़ रही, बड़ी बड़ी ले आस।
मैं पापन ऐसी गिरी, नहि भू नहि आकाश॥

(343)

पंछी का उड़ना भला, खुला मिले आकाश।
बँधकर वो मर जायगा, लिए मुक्ति की आस॥

(344)

पक्षी है मन आपका, लम्बी भरे उड़ान।
जाल फेंक कर मोह का, खींचे इंदु वितान॥

(345)

पीड़ित होती शारदा, पैसे से मत तोल।
शीश दिए भी ना मिले, विद्या धन अनमोल॥

(346)

पावन जमुना है कहीं, कहीं गंग जल धार।
कहीं बृजधरा की इड़ा, कहीं शुचित हरिद्वार॥

(347)

पाप श्राप सब नष्ट हो, उन्नत भारत भाल।
पड़ी घनेरी आपदा, संकट हर गोपाल।।

(348)

पापी तू है घना, करता हर दिन पाप।
अपने मतलब से यहाँ, दूहता भूमि आप॥

(349)

पाप चित्त से दूर हो, कृपा करो हे नाथ।
लोभ मोह के जाल को, काटो अब दो साथ॥

(350)

पाप धरा का बढ़ रहा, त्राहि माम चहुंओर।
हरने धरणी भार तब, आये नन्द किशोर॥

(351)

पाप कर्म मैंने किये, प्रभु कर तू उपकार।
गुरु दिलवा ऐसा मुझे, कर दे बेड़ा पार॥

(352)

पावस द्वादस की तिथि, करे अन्न का दान।
गायत्री वर मन्त्र है, माँ देवों सी मान॥

(353)

पाप बहुत सुख देत है, जब तक पके नहि जाय।
पक जाए जब पाप तो, दुख देता बहुताय॥

(354)

पावस पुलिन पवित्र है, पावन प्रीत प्रसंग।
श्याम प्रीत-बरसात में, भींगा तन मन अंग॥

(355)

पावस की छाई घटा, श्याम व्योम घनश्याम।
तान वेणु की छेड़ कर, मगन किया ब्रजधाम॥

(356)

पानी पानी हो गयी, पानी की हर बात।
यहाँ कहाँ पानी बचा, प्यासे हैं जज्बात॥

(357)

प्रभु बिन दम निकले नहीं, प्रभु ही मेरे प्राण।
नाम रात दिन मैं जपूँ, कर कान्हा कल्याण॥

(358)

प्रभु जी इतना कीजिये, रहे कर्म का भान।
ज्यादा की चाहत नहीं, हो कर्तव्य प्रधान॥

(359)

प्रभु जग में कोई नहीं, तुझसो तारणहार।
प्रभु बिन बोले बिन सुने, करते बेड़ा पार॥

(360)

प्रेम वेणु बृज बज रही, मगन करें सब नृत्य।
रास रचा भारी यहाँ, अद्भुत लीला कृत्य॥

(361)

प्रेम सुधा निधि पा लिया, पाकर तेरा नेह।
शांत चित्त अब हो रहा, उष्ण देह ज्यों मेह॥

(362)

प्रेम पुजारी मन मगन, नटखट तेरे संग।
आ दर्शन दे सांवरे, उठती चित्त उमंग॥

(363)

प्रेम मीन सा तड़पता, जब होता इक अंग।
स्वार्थ प्रेम में हो अगर, धूमिल हो सब रंग॥

(364)

प्रेम सरोवर डूब कर, खोई गज की भांति।
लीला धर तू आ बचा, दे दे मन को शांति॥

(365)

पाँच बरस युवराज सुत, दस तक चाकर जान।
वय सोलह होये समझ, उसको मित्र समान॥

(366)

पाँव रखो सब देख कर, श्वेत वस्त्र जल स्वच्छ।
सत्य वचन मुख हों सदा, कर्म निरत प्रत्यच्छ॥

(367)

पुस्तक ज्ञान न जो रहे, पर-हस्त धन प्रमाण।
जरूरत पर ये ना मिले, परधन पुस्तक-ज्ञान॥

(368)

पुस्तक अध्यन बाद भी, मूरख रहे गँवार।
सृजनशील हैं जो वही, लेता विज्ञ सँवार॥

(369)

पुस्तक से ज्ञानी गहें, मूल ज्ञान का सार।
फूलों से मधुकर गहे, जैसे मधु रस छार॥

(370)

पूजें न बलवान को, दिखा उसे निज शक्ति।
कौन डरा है काठ से, जले काठ हो भक्ति॥

(371)

पूजित हो नारी जहाँ, है वहीं देव स्थान।
काज विफल होते वहाँ, यदि हो स्त्री अपमान॥

(372)

पौध लगाई प्याज की, डाले रोज कर्पूर।
कस्तूरी की स्वाद भी, बदबू करे न दूर॥

(373)

प्रीत वेणु मृदु मृदु बजी, झंकृत मन का तार।
इंदु हृदय घायल करें, तिरछी नैन कटार॥

(374)

प्राणों से प्यारा पिया, वेणु बजैया श्याम।
पहन फिरे पीताम्बरी, पुण्य धरा ब्रज धाम॥

(375)

प्यारा लागे श्याम हरि, छोड़ गए क्यों नाथ।
हृदय प्रेम बाती जला, गए अक्रूर साथ॥

(376)

फूल रोज का कल दिया, आज किया प्रोपोज़।
छोड़ी ढ़ीली डोर तो, कर देगी डिस्पोज॥

(377)

बरफ पिघल कर जल बने, रूप स्वयं का छोड़।
परम ज्योत से तुम मिलो, जीवन सत्य निचोड़॥

(378)

बनना है तो बन दिखो, जैसे काला मेह।
सभी जगह है घूमता, बरस दिखाए स्नेह॥

(379)

बरस बरस कर बदरिया, नैन वारि टपकाय।
श्याम पिया तुम बिन जिया, सावन आग लगाय॥

(380)

बल बन तू असहाय को, मन में हो संतुष्टि।
दीन दुखी आशीष दें, प्रेम की होय पुष्टि॥

(381)

बजा मदन रत मुरलिया, पावस भरे अनंग।
श्याम सलोने सांवरे, भीगा भीगा अंग॥

(382)

बन्ध सङ्ग ऊखल गए, है दामोदर नाम।
प्रभु जी की लीला मधुर, शत शत तुम्हें प्रणाम॥

(383)

बना अटरिया प्रीत की, क्षण में देइ उजाड़।
छलिया मोहन छल गयो, पाती दिल की फाड़॥

(384)

बढ़ा पाप जब भूमि पर, हुआ धर्म का नाश।
प्रभु प्रकटे गोकुल धरा, हरने मानव त्रास॥

(385)

बढ़ता जाये पाप जब, हो विवेक तब नष्ट।
अविवेकी होता रहे, सदा पाप से भ्रष्ट॥

(386)

बढ़ता है जब पुण्य तब, बढ़ता बुद्धि विवेक।
जिसमें बुद्धि विवेक हो, कार्य करे वह नेक॥

(387)

बरसाने की राधिका, नन्द गांव के श्याम।
धर ले शीश पुनीत रज, पुण्य धरा बृज धाम॥

(388)

बदले नहीं स्वभाव तो, जितनी भी दो राय।
अवसर आये उष्ण जल, शीत स्वतः हो जाय॥

(389)

बद-जन बाहर कीजिये, कुल अपकृत तो त्याग।
ग्राम देश के जो कलुष, सभी जगह से भाग॥

(390)

बेगि आय संकट हरो, प्रभु तुम दीनानाथ।
सारा जगत निहारता, रखो कृपा का हाथ॥

(391)

बेटी पत्नी माँ बहन, नारी कितने रूप।
सच्ची तेरी साधना, निभा गयी हर रूप॥

(392)

बेटा बेटा सब कहे, बेटी क्या जंजाल।
होती ना अगर बिटिया, आते कैसे लाल॥

(393)

बढ़ती है शुभ भावना, लेकर प्रभु का रंग।
छूट गये तब मोह के, मायावी सब संग॥

(394)

बिन बोले सब जानता, बना कहे बिन नूर।
नानक प्रभु को नाम ले, होय कष्ट सब दूर॥

(395)

बहिर्मुखी ऊर्जा भरो, मेरे हृदय सकाम।
अधोगुणी मैं मांगता, ले जाओ प्रभु धाम॥

(396)

बाती जल जल देखती, जले पतंगा पास।
तड़प तड़प मैं भी जला, नाथ मिलन की आस।।

(397)

बीत गया सो भूल जा, थाम नयी अब डोर।
स्वागत कर नववर्ष का, होके भाव विभोर॥

(398)

बीच भँवर नैया फँसी, पिय टूटी पतवार।
जीवन घट भी रीतता, कैसे जाऊँ पार॥

(399)

बुद्धि व जिज्ञासा करे, दूर भय व अज्ञान।
निश्चित कर क्या चाहिए, आत्मबोध को जान॥

(400)

बुद्धि ज्ञान प्रभु दीजिये, खोलूँ मन के द्वार।
भव अरण्य से भाग कर, कैसे बेड़ा पार॥

(401)

बुद्धि स्वयं की हो न जब, क्या करे शास्त्र ज्ञान।
अंधा दर्पण क्या करे, बिन गुण सून जहान॥

(402)

बुद्धि रूप बस मातु तुम, अब मुझको दो तार।
पुनः पुनः तुझको नमन, करता बारम्बार॥

(403)

बादल गरजे शरद में, बरसे वर्षा बाज।
नीच सिर्फ है बोलता, सज्जन करते काज॥

(404)

बाजू मेरे थक गये, छूट रहा पतवार।
जीवन नौका थाम लो, प्रभु कर दो भव पार।।

(405)

बुरी होती बुराइयाँ, पहले करो समाप्त।
ख़त्म करेगी वो तुझे, कुछ ना होगा प्राप्त॥

(406)

बिन मांगे मोती मिले, मांगे मिले न भीख।
भूल गुनी इस बात को, दादा गीरी सीख॥

(407)

बिना कर्म भाग्य रूठता, कर्म भाग्य उपजाय।
सोता है सो खो रहा, भाग्य कर्म से आय॥

(408)

बिना एकता देश में, हो जाय शीघ्र नष्ट।
लोकतंत्र जब एक हो, रहे शत्रु को कष्ट॥

(409)

बोल सभा में धैर्य से, रण में आयुध ध्यान।
उन्नति में कर दें क्षमा, यही विद्ध पहचान॥

(410)

ब्रह्म शून्य से भी परे, आत्मा में वह व्याप्त।
चक्षु खोल तू ले परख, केशव होंगे प्राप्त॥

(411)

ब्रह्म ज्ञान जब प्राप्त हो, होवे बेड़ा पार।
चौरासी के चक्र से, मुक्त करो दातार॥

(412)

ब्रह्म शून्य से भी परे, आत्मा में वह व्याप्त।
चक्षु खोल तू ले परख, केशव होंगे प्राप्त॥

(413)

भवसागर से तारती, राम नाम पतवार।
राम शरण आ बावरे, नैया होगी पार॥

(414)

भद्र जनों की कर मदद, हर दुर्बल की पीर।
हृदय हीन का काम तो, जल पर खिंची लकीर॥

(415)

भक्त हृदय नहि शुद्ध हो, मूर्त नदी जल देख।
हृदय शुद्धि सह ध्यान से, सत्संगी जल रेख॥

(416)

भूखा शेर न खा सके, मांस छोड़ कर घास।
विपदा में भी न धरें, नीच कर्म निज पास॥

(417)

भक्तन के वत्सल प्रभो, हरि मेरो अवलम्ब।
बसी हृदय छवि मोहिनी, झूलन बैठि कदम्ब॥

(418)

भिक्षा कभी न माँगते, जल वर्षण को मेघ।
योग्य बनोगे यदि स्वयं, लक्ष्य करोगे भेद॥

(419)

भारत की ललना करे, अब बड़े बड़े काम।
अंतरिक्ष ये जा रही, जग में ऊँचा नाम॥

(420)

भाग्यविधाता कमल दृग, विद्या दायिनि मात।
ज्ञान रूप अंबुज सरिस, हे शारद! प्रणिपात॥

(421)

भग्न हुआ हिय का सदन, बिखरे हैं जज्बात।
सिमट गए संबंध सब, मतलब की हर बात॥

(422)

भोर भइ जग जग गया, रुदन करें प्रभु आय।
रात्रि मध्य मथुरा नगर, कन्या दी पहुंचाय॥

(423)

भ्रमर भ्रमित भ्रष्ट भ्रांतियाँ, भ्रामक भ्रम भी भ्रष्ट।
काल कलुष की कल्पना, कल्मष कलुषित कष्ट॥

(424)

मन मयूर स्पंदित हुआ, निरख प्रथम बरसात।
कालिंदी तट झूलता, राधा जी के साथ॥

(425)

मन ऊपर है इन्द्रि से, मन से ऊपर बुद्धि।
बुद्धि आत्म से है परे, कर ले निज तन शुद्धि॥

(426)

मन तो पक्षी आपका, लंबी भरे उड़ान।
जाल फेंक कर मोह का, खींचे इंदु वितान॥

(427)

मन झंकृत होने लगा, ज्यों वीणा के तार।
अलख जगी हरि नाम की, यही जगत का सार॥

(428)

मन धन अस्थिर है सदा, तन अधीन है काल।
यौवन बुझता समय से, यश स्थिर हर हाल॥

(429)

मनुज कला संगीत बिन, होता है निरुपाय।
पूंछ विहीन पशु नर लगे, घास नहीं बस खाय॥

(430)

ममता तज कर सर्पिणी, खाती अंडे आप।
भूख बड़ी है निर्दयी, बहुत कराये पाप॥

(431)

मन मेरा चंचल विकल, करे नित्य उत्पात।
चरण शरण ले शांत कर, विनति करूँ मैं नाथ॥

(432)

मन मोरा चंचल घना, शांत करो आ तात।
सुबह शाम यह डोलता, करता अति उत्पात॥

(433)

मन को पंछी उड़ करे, ऐसो गज़ब धमाल।
सात समंदर यूँ उड़े, पल में वापस जाल॥

(434)

मन झंकृत होने लगा, ज्यों वीणा के तार।
अलख जगी हरि नाम की, जान गया जग सार॥

(435)

मनवा तो दुख बेल है, फिक्र करत दिन रात।
श्याम शरण जो आ गया, बन जायगी बात॥

(436)

मनवा झंकृत हो उठा, दिल बजती संतूर।
तन हुआ शिव कुमार सा, घंटी बाजे दूर॥

(437)

मधुवन में खेलें किशन होली राधा संग।
मुख में मली अबीर जब, उड़ा रंग ही रंग॥

(438)

मदिरा मदिरा भज रहा, यह घर नाशी होय।
बीच समंदर डूब कर, जीवित बचा न कोय॥

(439)

मदिरा लत सबसे बुरी, करती सत्या नाश।
इस सागर जो डूबता, देखे महा विनाश॥

(440)

मरीचिका सी लालसा, करती तन मन त्रस्त।
दिया तिलांजलि लोभ को, प्रभु सुमिरन में व्यस्त॥

(441)

मद ममता अभिमान तज, बनो पूर्ण इंसान।
मन सुंदर सच्चा रहे, आये अनुपम ज्ञान॥

(442)

मंगलमय हो भावना, सभी जीव के बीच।
सम भावमनुज जो रहे, सुख ही सुख ले सींच॥

(443)

मन्त्रौषधि से सर्प के, काटे का उपचार।
घाव दिये यदि धूर्त नें, होय नही उपचार॥

(444)

मधुर बोलते सामने, पीछे करते घात।
विषघट लेपित दुग्ध से, ये बैरी साक्षात॥

(445)

मूर्ख मात्र निज गेह में, जमींदार निज ग्राम।
पुजता नृप निज राज्य में, विद्धत सकल जहान॥

(446)

मूरत तू वात्सल्य की, मात जीवनाधार।
तेरी महिमा पूज्य है, नित्य करूँ सत्कार॥

(447)

मुख शृंगारित सत्य से, समर विजय भुज सोह।
शास्त्र श्रवण शुभ कर्ण को, शुचि विचार मन मोह॥

(448)

मान दिए हरखे नहीं, क्रोध न दे अपमान।
क्रोधित संत जो होय तो, शब्द का रखे ध्यान॥

(449)

माणिक मिले न हर गिरी, मोती ना गज माथ।
हर वन चन्दन का नहीं, साधु न चले जमात॥

(450)

मार्तंड तपी रेत तो, करती ज्यादा दाह।
बड़न मिले जो साथ तो, नीच करे बस डाह॥

(451)

मायापति की साधना, करे मोह को भंग।
वैतरणी तर जायगा, सीखो जीवन ढंग॥

(452)

माटी का है इंदु तन, माटी का घट जान।
जल कर शीतल मन करे, बड़ा उसे तू मान॥

(453)

माटी को है इंदु तन, माटी को ही माठ।
आगे पिछे दोउ जले, शांत करे वो ठाठ॥

(454)

मानव जीवन गरल सम, पीना ही है जान।
ईश कृपा से अनुभव करो, जप निशिदिन प्रभु नाम॥

(455)

मधुर मिलन हो नाथ से, छोड़ा तन का स्वार्थ।
नव दुकूल पावन धरूँ, करना है परमार्थ॥

(456)

मधुरवाणी उदारता, धीरज निर्णय शक्ति।
प्रकृतिजन्य ये चार हैं, इनके बिना न भक्ति॥

(457)

मदिर हेमन्त अवनि तल, वेणु सप्त सुर तान।
मद्यप मद्यप पवन चल, तरणि सुता तट गान॥

(458)

मीठे स्वर हैं वेणु के, तीखे तेरे नैन।
सुधबुध भूला बांवरा, खोया दिल का चैन॥

(459)

मीठा जो बोले सदा, कर न कभी विश्वास।
जिव्हा आगे मधु लगा, होत हृदय विष वास॥

(460)

मिले अगर अपमान भी, मत कर उसकी बात।
वे रज कण भी श्रेष्ठ जो, उछल चूमती माथ॥

(461)

मिले दान से यश सदा, संचय करें न वित्त।
बादल अम्बर पर रहे, जलधि पडा भू चित्त॥

(462)

मी टू कौन बवाल है, फँस रहे बड़े लोग।
जित देखो तित पाइए, लगा अमेरिकी रोग॥

(463)

मोहन की मुस्कान मृदु, खिलता ज्यूँ अरविंद।
अटक भ्रमर से दृग गए, मुख मण्डल गोविंद॥

(464)

मोहन मनहर पीत वसन, केकि पिच्छ हैं भाल।
लोल अरुण लोचन सरल, गुंजा मनका माल॥

(465)

मोहन मूरत मन मदिर, मोहे मचल मलंग।
श्याम सलोने स्मित सहज, शोभित श्रीजी सङ्ग॥

(466)

मोल मिले बाजार में, न्याय प्रतिष्ठा मित्र।
प्रगतिशील इस काल में, मिलता नहीं चरित्र।।

(467)

मोह अहं से तन रचा, भ्रमित करे दिन रात।
ध्यान नियम जप योग से, सुलझेगी हर बात॥

(468)

मोह पाश बंधा हुआ, मनवा तड़पत जाय।
चरण शरण जो आ गया, शीतल हृदय बनाय॥

(469)

मोह सिंधु में डूब कर, चित्त करे उत्पात।
माया ठगनी तो ठगे, रक्षा कर ओ तात॥

(470)

मोर पंख धर शीश पर, छेड़ वेणु की तान।
चला नैन के वाण वो, ले लेता है प्रान॥

(471)

मौन प्रीत निष्ठुर घणी, चुप रह निकसे भास।
कुरंग भुजंग कंज सी, अंदर अंदर त्रास॥

(472)

मांग रहा भिक्षा सतत, दे दे शरण कृपालु।
प्रेम स्नेह से भर मुझे, दाता दीन दयालु॥

(473)

माँ भगिनी पत्नी सुता, दुखी जहाँ ये चार।
नाश होय उसका सदा, सुखी न हो परिवार॥

(474)

मुख दधि माखन मल लियो, धर ली मटकी माथ।
लीला अद्भुत कर रहे, तीन लोक के नाथ॥

(475)

मुश्किल मन को साधना, सरल जलधि का पान।
मेरु उखाड़ ले तू भले, कठिन साधना ध्यान॥

(476)

मूर्ख सदा होता रहे, प्रतिदिन खुश औ क्लांत।
विद्ध जनों को देखिए, होते नहीं अशांत॥

(477)

मूरख को वश में करें, धन दौलत से लाद।
ज्ञानी हो वश में सदा, मूल तत्व के बाद॥

(478)

मेघ श्याम आनन द्युतित, कांति मयी वामांग।
आर्ति निवारक राम प्रभु, प्रणति तुम्हें साष्टांग॥

(479)

मेघ भरी पावस निशा, गरजत घन घनघोर।
धम धम जीया करत है, नैनन नन्द किशोर॥

(480)

मैं पापी आया शरण, सुन लो दीनानाथ।
पाप हरो करुणा करो, सदा रहो प्रभु साथ॥

(481)

मृग तृष्णा अँखियाँ तके, ढूंढे मरु उद्यान।
गर्म हवा जीवन थका, अब खोजें विश्राम॥

(482)

मृगमद कुमकुम तन लगा, शीतल हुई न देह।
श्याम नाम की रट लगी, प्रीत बरसता गेह॥

(483)

मृत्यु अमरता से भरी, एक जन्म में पाय।
मोह मौत लाती सदा, चाहे कुछ हो जाय॥

(484)

मुरली की धुन है मधुर, मीठी मीठी बात।
ऋतु बसन्त की है मदिर, अर्ध चन्द्र की रात॥

(485)

मुरलीधर माधव महत, मोहन माखन चोर।
वेणु वृष्णि वन वन बजी, स्वरलहरी चहुँओर॥

(486)

म्हारे प्यारे साजना, राखो म्हारी लाज।
मोहन बिन अब कौन है, जग में म्हारो आज॥

(487)

यश में करे न गर्व जो, अपयश करे न रुष्ट।
कटु न बोलते क्रोध में, जान उसे संतुष्ट॥

(488)

यज्ञ पुरुष को साध ले, पूरा होगा यज्ञ।
बतला अपनी वेदना, मोहन हैं सर्वज्ञ॥

(489)

यह तन तो सुंदर भवन, दस माले नौ द्वार।
रक्षक तन का प्राण है, माया सब संसार॥

(490)

याद करूँ चुप चुप रहूँ, नैन बसे अभिराम।
दर्शन दे अब मन विकल, दिखा मदिर छवि श्याम॥

(491)

ये मन पाखी सा उड़े, घूर घूर जग आय।
मन की डोरी बांध ली, फिर भी धूम मचाय॥

(492)

ये आँसू अनमोल हैं, बहा नहीं बेकार।
भरी हुई है भावना, ज्यों पर्वत जलधार॥

(493)

ये मन पाखी सा उड़े, घूर घूर जग आय।
मन की डोरी बांध ली, फिर भी धूम मचाय॥

(494)

यूँ मुस्काते विहँसते, जीवन बढ़ता जाय।
कुछ बढ़ते इत हों कदम, कुछ उत कदम बढ़ाय॥

(495)

युगल सरोरूह पद शरण, नमन सच्चिदानंद।
अधर बिंबफल चपल दृग, बंदउँ कोशल चन्द॥

(496)

योगी ज्ञानी जानते, है प्रभु हृदय निवास।
निंदा घृणा न द्वेष में, शून्य ब्रह्म का वास॥

(497)

यौवन के सँग रूप हो, ऊँचा कुल संबंध।
बुद्धि हीन नहि चमकते, किशुक आय न गंध॥

(498)

रजनीकर सुख दे नहीं, न हरे मेरो ताप।
माधव बिन कुछ भी नहीं, किस विधि टरे विलाप॥

(499)

रजनीगन्धा पुष्प सी, कुमुद चन्द्रिका हार।
जीवन परिमल चरण में, माँ पुष्प पुरुष्कार॥

(500)

रक्त पुष्प गलहार है, चम चम चमके वस्त्र।
पाणि शूल शायक धनुष, शोभित होते शस्त्र॥

(501)

रखिए शील सहेज कर, शील बिना मृत मान।
धन फिर फिर मिलता हमें, शील बिना निष्प्राण॥

(502)

रहे नहीं तन संतुलित, बोल सके न दक्ष।
सत्य जानिए आप तब, लक्षण मृत्यु समक्ष॥

(503)

रसिया श्यामल भ्रमर सा, है श्यामल ही रात।
मेघ व्योम छाए हुए, प्रेम भरी बरसात॥

(504)

राम नाम भज मन सतत, होंगे दूर विकार।
देह चदरिया स्वच्छ कर, कर ले बेड़ा पार॥

(505)

राम नाम अनमोल है, राम करे भव पार।
राम सहारे जो रहे, मिटता कष्ट अपार॥

(506)

राम रमापति प्राण हैं, जीवनदायी राम।
आना जाना है जगत, राम सकल सुख धाम॥

(507)

राम नाम भज ले मनुज, आयी जीवन शाम।
एक यही आधार है, सभी सुखों का धाम।।

(508)

राग द्वेष के दैत्य दो, नित्य करे तकरार।
औघड़ पानी बढ़ गया, शीघ्र करो संहार॥

(509)

राम राम जप राम रे, राम जगत आधार।
राम नाम बिन कुछ नहीं, राम नाम जग सार॥

(510)

राम रमे हर याम में, राम जीव के सार।
जनम-मरण बंधन कटे, सुमिरन नाम अपार।।

(511)

राग द्वेष से रचित तन, जी का बन जंजाल।
मोह बेल सिंचित करे, धूल बुद्धि पर डाल॥

(512)

राधा मेरी स्वामिनी, हरियो कष्ट अपार।
संग बृजेश विराजती, महिमा अपरम्पार॥

(513)

राम नाम सुमिरन सतत, राम नाम कल्याण।
राम नाम महिमा अनत, राम नाम है प्राण॥

(514)

राम नाम जप ले तनिक, होगा तू भव पार।
प्रभु तू पालन हार है, प्रभु ही तारण हार॥

(515)

राम नाम की भूख ले, पाया सन्त प्रसाद।
कृपा हुई गुरुदेव की, दूर हुए अवसाद॥

(516)

राम नाम सुखधाम है, राम नाम ही सार।
राम नाम जप रात दिन, भव से होगा पार॥

(517)

रास रचा खुद को नचा, जगत नचाया साधि।
तेरा मेरा है मिलन, दूर करो सब व्याधि॥

(518)

राग द्वेष भय के असुर, छलते दिन औ रात।
जो मन कर लिया नियमित, बन जाएगी बात॥

(519)

रात चंद्र दिन सूर्य से, होता आभावान।
त्रैलोकी हो धर्म से, कुल हो सुत गुणवान॥

(520)

राजा देखे कान से, पंडित ज्ञान सजाय।
गंध देख पशु जानता, मूर्ख रहे भुत माय॥

(521)

राह नहीं रहमत नहीं, नहीं बची पहचान।
ईश्वर तेरे द्वार पर, सजदे में इंसान॥

(522)

रहे सर्वदा सत्वगुण, हितवर्धक परमार्थ।
किरपा करे अहैतुकी, नैतिकता चरितार्थ॥

(523)

रहे साधना कामना, सुख अनुभूति प्रयास।
अहंकार तृष्णा बनी, प्रभु आलिंगन आस॥

(524)

रिमझिम सावन की झड़ी, यमुना जी का तीर।
राधा जी के साथ में, झूल रहे ब्रज वीर॥

(525)

रीति प्रीति की बाँचते, गढ़ते हैं सुर ताल।
डूब गोपियन प्रेम में, नृत्य करें गोपाल॥

(526)

रूप लावण्य आपका, ज्यूँ नभ पर हो इंदु।
है मुस्कान विभावरी, निहार माथे बिंदु॥

(527)

लक्ष्मी दुर्गा पद्मिनी, सब भारत की शान।
दिया देह बलिदान में, और बचाई आन॥

(528)

लकड़ी से काया जली, कर्म बचे बन राख।
खोले तन का पिंजरा, पक्षी बैठा शाख।।

(529)

लहर लहर पीताम्बरी, कान्हा तन लहराय।
मन्त्र मुग्ध ऐसा किया, उस बिन कुछ न सुझाय॥

(530)

लहरें लोल किलोल कर, छेड़े मधुर तरंग।
मधुर अधर स्मित भाल शशि, जैसे रूप अनंग॥

(531)

लगे आपके पाप को, मातृभूमि का श्राप।
दो पेड़ लगा कर यहाँ, कर लो पश्चाताप॥

(532)

लम्बी लगती है उसे, जागी हो जो रात।
थोड़ा चलना दे थका, वय बिन ज्ञानी बात॥

(533)

लाभ हेतु मत संचिए, वित्त दान का भोग।
मधुमक्खी करती जमा, करे अन्य उपयोग॥

(534)

लालच दे बस में करो, लोभी खुश हो जाय।
बस मीठे दो बोल से, क्रोधी हो निरुपाय॥

(535)

लेकर आओ प्रभु सतत, प्रेम सुधा मधु धार।
कमल नयन मुख देखता, प्रिय पग पद्म पखार॥

(536)

लेकर आया रोशनी, भर कर करतल दीप।
सुबह झिलमिली हो गई, ज्यूँ मोती से सीप॥

(537)

लिए क्षितिज पर लालिमा, उदित मनस का भानु।
सांध्य काल दर्शन प्रभु, प्रशमित दग्ध कृशानु॥

(538)

लीला धर लीला रची, रचा अनूठा खेल।
पांच व्यसन भर देह में, जम का दे फन्देल॥

(539)

लीलाधर लीला करै, ग्वालन रंग लगाय।
सुघड़ सलोनो सांवरो, भोलो बन छिप जाय॥

(540)

लीलाधर लीला रचें, लीला करे प्रताप।
नित प्रभु की लीला पढ़ें, प्रभु हरें सब ताप॥

(541)

लोचन व्याकुल हो रहे, श्याम दरस बिन मेल।
विरह अगन में मैं जलूँ, ज्यों बाती बिन तेल॥

(542)

लोहित सूरज ढल रहा, दे जीवन विश्राम।
पुनः बटोही आ रहा, पहन नवल अभिराम।।

(543)

लोहित रोहित रवि तरणि, मोहित दीप्त द्युलोक।
व्योम प्रभा अरुणित सम, भानु तिग्मांशु श्लोक॥

(544)

लोभ मोह माया रहे, सदा चित्त में आय।
सत्संगत गुरु की करो, सब विकार छूट जाय॥

(545)

लोभ मोह के जाल में, उलझी मेरी देह।
मारा मारा मैं फिरूँ, लागा तन से नेह॥

(546)

लोभ मोह में डूबता, बुद्धि रहित इंसान।
खाकर ठोकर सुधरता, तब ही आता ज्ञान॥

(547)

लोभी नर छोड़े नहीं, मर कर भी मद लोभ।
अंत काल पछतायगे, हृदय होयगा क्षोभ॥

(548)

लोचन खंजन मद भरे, कीर नासिका चारु।
घूंघर अलकावलि कहे, नैनन से मैं मारु॥

(549)

लाया रवि से छीन कर, मैं मुट्ठी भर धूप।
तिमिर उन्हें कैसे दिखें, जो अंधों के भूप॥

(550)

लौटो वापस सांवरा, नैना रहे पुकार।
मीठी तेरी बँसुरिया, ढूंढे कृष्ण मुरार॥

(551)

लूट गया दिल सांवरा, सुना राग सुर सात।
मैं जोगन विरहन तपूँ, तन अनंग सौगात॥

(552)

वक्र सूंड विकराल तन, अनगिन भानु प्रकाश।
करें कार्य सिद्ध गणपति, शीघ्र विघ्न का नाश॥

(553)

वक्त सदा चलता रहे, समय-यंत्र निरपेक्ष।
सुख दुख मिलते हैं सदा, कर्मों के सापेक्ष।।

(554)

वस्त्र धवल श्वेतार्क से, इंदु वर्ण भुज चार।
सस्मित मुख मुद्रा रहे, गजानन नमस्कार॥

(555)

वह साथी किस काम का, दुख में काम न आय।
रोग रहे निज देह में, दवा दूर वन माय॥

(556)

वन्य तृणों सी जब लगे, मन में जलती आग।
क्षमा शस्त्र से दुष्ट भी, करे दुष्टता त्याग॥

(557)

वासुदेव देवकी तनय, जगद्गुरु तुम्हें प्रणाम।
किया कंस चाणूर वध, जपो कृष्ण का नाम॥

(558)

वायु वेग वज्रांग है, तन मन करे प्रभाष।
बुद्धि श्रेष्ठ बानर मरुत, इन्द्रिराग का नाश॥

(559)

वाणी मधुर उदारता, धीरज निर्णय शक्ति।
प्रकृति जन्य ये चार हैं, किये न आये भक्ति॥

(560)

वारिद मध्य निहारिका, आशा सिंचित स्नेह।
नव दुकूल धारे चला, लेने को नव देह॥

(561)

वेद ज्ञान की कुशलता, देती श्री धन धान्य।
सात्विक श्रुत वेदज्ञ ही, होता चहुँदिसि मान्य॥

(562)

वेगवान सरिता बहे, ज्यों सागर की ओर।
कृष्ण प्रेम में गोपियाँ, दौड़ रहीं पुरजोर॥

(563)

वेणु अधर पर जा लगी, मोहन हुए त्रिभंग।
क्षण में अद्भुत ध्वनि सतत, क्षण में तान तरंग॥

(564)

वेद ज्ञान के स्रोत हैं, गृहणी से घर द्वार।
कृषक अन्न का स्रोत है, धन बिन क्या सँसार॥

(565)

वेद ज्ञान के स्रोत हैं, गृहणी से घर द्वार।
कृषक अन्न के स्रोत हैं, धन बिन क्या संसार॥

(566)

वेद शास्त्रों को पढ़ा, मिला न ब्रह्मा तत्व।
चम्मच भोज परोसता, अटे न उसमें सत्व॥

(567)

वे जो बैठे हैं वहाँ, सज्जन गुणी महान।
ईश रूप साक्षात् हैं, मोहन रस की खान॥

(568)

विकल चपल मन चेतना, चेतस कर उद्गार।
अंध तिमिर पथ चल पड़ा, करो मार्ग प्रभु पार॥

(569)

विरह अगन ऐसी लगी, कान्हा कौन बुझाय।
शीघ्र चले आ साजना, तुम बिन रहा न जाय॥

(570)

विरह अगन में मैं जलूं, बहता अँखियन नीर।
शीघ्र दरस दे सांवरे, हर ले हिय की पीर॥

(571)

विरह अनल जल जल जली, शांत करे दृग नीर।
मोहन तो ले मन गए, पृथक नीर से क्षीर॥

(572)

विरद अलंकृत नभ पटल, नीलकंठ त्रिपुरारि।
गिरि शृंगों पर रश्मि सम, अभ्यंकर कामारि॥

(573)

विरह अनल जल गोपिका, करती नित संताप।
उधो ज्ञान मत दीजियो, हिय कान्हा की छाप॥

(574)

विरहानल ऐसी जली, मुरझायो है इंदु।
श्याम सिंधु हर ताप को, मलय सुधा हर बिंदु॥

(575)

विधु व्याकुल विरहागिन है, विहग विचरते व्योम।
अगणित अम्बर अर्यमा, आतप मध्यम योम॥

(576)

विद्या सम बांधव नहीं, व्याधि त्रास तन जान।
संतति जैसा प्रिय नहीं, बली न प्रभू समान॥

(577)

विद्या भूषण आज के, कोचिंग रहे चलाय।
भूल गये निज कर्म को, खूबहिं नोट कमाय॥

(578)

विद्वत, सज्जन मित्रता, स्वास्थ्य और सम्मान
श्रेष्ठ जन्म, स्व-निर्भरता, धन से कम मत मान॥

(579)

विधुमुख शोभा कह सके, ऐसी जग में कौन।
नयन नयन से जो मिले, देह हो गयी मौन॥

(580)

वृत्ति चित्त की है विकल, शिरोत्पाद हो शांति।
सहज सरल मन कर प्रभो, मुख मण्डल हो कांति॥

(581)

व्यर्थ भला क्यों सोचता, जो न सोचने योग्य।
जो सोचे उत्तम प्रिय, सकल सम्पदा भोग्य॥

(582)

शरद श्वेत सित संह्ला, शीतल मलयज सैन।
नीरव नीरज नीर सम, नाचत नटखट नैन॥

(583)

शरणागत आया प्रभो, कर मेरा उद्धार।
मेरा मन भय से भरा, तारो तारण हार॥

(584)

शब्द ज्ञान असमाप्य है, उम्र विघ्न भरपूर।
छोडो दुर्गुण गुण धरो, करे हंस जल दूर॥

(585)

शुद्ध भावना मात्र तो, दूर न करती रोग।
नियमानुसार लीजिये, औषधि बने निरोग॥

(586)

शिक्षक ऐसा चाहिए, संस्कृति रहे अखंड।
संस्कार ऊँचे करे, न हों बालक उद्दंड॥

(587)

श्याम नाम रटता रहूँ, प्रभु कर बेड़ा पार।
केशव आ रक्षा करो, जग में कष्ट अपार॥

(588)

श्याम रंग लाग्यो चटक, दुजो न चढ़े रंग।
प्रीत मँजीरा उर बजे, अरु बाजे मृदंग॥

(589)

श्लोक वेद है पुराण की, माँ तू सारा सार।
ऋषि मुनियों की साधना, तुमसे माँ संसार॥

(590)

सर्वप्रथम वंदन करूं, जीण भवानी मात।
कृपा मिलेगी माय की, सुखमय होय प्रभात॥

(591)

समझो सिय की वेदना, रघुकुल मणि श्री राम।
जल जल दीपक पर पतंग, करे प्रीत अभिराम॥

(592)

सत्य कहें प्रिय भी कहें, सेवें मानव जात।
मिथ्या से कुछ ना मिले, धर्म कहे ये बात॥

(593)

सत्य कभी झुकता नहीं, रहता वह आश्वस्त।
सत्य मार्ग पर ही चलो, कठिनाई हो परस्त॥

(594)

सज्जन कभी न छोड़ते, अपने नेक विचार।
अहिगन पीकर दुग्ध भी, देते दंश प्रहार॥

(595)

सदा इंद्रियों पर रहे, संयम आसन श्लेष।
चरम सिद्धि से मन वचन, योग का समावेश॥

(596)

सदा साथ रहती कृपा, धेनु वत्स ज्यूँ सङ्ग।
श्रीहरि शांति सहेजते, करें प्रफुल्लित अंग॥

(597)

सत्य परिष्कृत जिन्दगी, ज्ञान पूर्ण है सत्य।
ब्रह्म तत्वमसि जान कर, अमर हुए सब कृत्य॥

(598)

समाधान कर दो जननि, विषम हुए दिनमान।
प्रकृति काल अनुकूल हो, मिले तत्व का ज्ञान॥

(599)

सदा इंद्रियों पर रहे, संयम न कि आवेश।
दिनचर्या में योग से, जीवन बने विशेष॥

(600)

सरिता पिए न जल कभी, वृक्ष न निजफल खाय।
अन्न न खाते पयधरे, सन्त परहित सुख पाय॥

(601)

सफल करे विद्या नहीं, करे सफल है भाग्य।
विद्या तो पाषाण सम, पुजवाता है भाग्य॥

(602)

सदा सत्य अरु प्रिय कहें, दुखी न मानव जात।
खुशी हेतु मत झूठ कह, धर्म कहे यह बात॥

(603)

समता अगर हो दृष्टि में, पूछो कौन है दीन।
तजे ब्रह्मत्व जो विप्र तो, क्या वह विप्र प्रवीन॥

(604)

सद्गुण देना मनुज को, बहुत कठिन है खेल।
दुर्गुण सीखें सहज नर, गर्त रहे जो ठेल॥

(605)

सहें वेदना काम की, काम करे हो कष्ट।
काम किये आनंद हो, होय कष्ट भी नष्ट॥

(606)

संयम मन पर रख तभी, हृदय रहेगा शांत।
हो समस्त जग मित्रवत, मुक्ति सहज तज क्लांत॥

(607)

सूक्ष्म वस्तुयें भी सदा, काम करे जब संग।
डोर बनी हो घास से, लेगी बांध मतंग॥

(608)

सूर्य उगे न शशि उगे, जुगनू रहे उदास।
दोनों फीके से लगे, सूर्य तेज आभाष॥

(609)

सजे सलोना साँवरा, श्याम सृष्टि-करतार।
मुख मोहक मोहे मदिर, मनहर मदन मुरार॥

(610)

सारे रत्न लुटाय के, वक्त की कीमत जान।
खरच रहा क्षण कीमती, गलती करे महान॥

(611)

साधु संत का संग ही, मुक्ति मोक्ष का द्वार।
मानव जीवन है मिला, कर ले कर्म सुधार॥

(612)

सागर तट पर मैं खड़ा, लहरें रहा निहार।
प्रभु चरणों की दे झलक, कर दे बेड़ा पार॥

(613)

साधु नहीं हिंसा करे, प्रभु निज सृष्टि विनाश।
माँ नहि शापे पूत को, करे न वसुधा हास॥

(614)

सांप क्रूर होते तथा, क्रूर धूर्त इंसान।
धूर्त मनुज को नाग से, ज्यादा बैरी जान॥

(615)

संकटमोचन आप प्रभु, लाल देह हनुमंत।
सिया हृदय शीतल किये, दैत्य कोप का अंत॥

(616)

संकट से रक्षा करो, जन जन का कल्याण।
मात दरस साक्षात दो, अर्पित तन मन प्राण॥

(617)

संकट मोचन आप प्रभु, लाल देह हनुमन्त।
सिया खोज को चल दिये, कियो जला सब अंत॥

(618)

सेवा का व्रत लीजिये, नेक बड़ा ही काम।
वृद्धों की सेवा करे, मन बने शांति धाम॥

(619)

सोच पॉजीटिव रख लियो, संभव सब हो जाय।
कूड़ा भी तब स्वर्ण में, परिवर्तित हो जाय॥

(620)

सोने के रथ बैठ कर, कंस दूत अक्रूर।
लेने आये कृष्ण को, ले जाएं अति दूर॥

(621)

संस्मृति विस्मृति सत्य सम, अमृत अनुसंधान।
वेद ज्ञान विज्ञान में, इसे शोध कर जान॥

(622)

संकट मोचन हनुमते, लाल देह वज्रांग।
कष्ट हरो प्रभु आप अब, नमस्कार साष्टांग॥

(623)

सुध बुध खोई सांवरे, जागी उर में प्रीत।
लोक लाज तज बावरी, भागी मिलने मीत॥

(624)

संकट हर कर दे कृपा, मिटा जगत का त्रास।
प्रभु गजेंद्र की भाँति ही, तुझ पर ही अब आस॥

(625)

सुंदर छवि है साँवरा, जग का तारण हार।
इंदु सजल लोचन कहे, उर में रह सरकार॥

(626)

सूंड वक्र लम्बा उदर, आनन भानु प्रकाश।
कार्य सिद्ध गणपति करें, विघ्न शीघ्र हो नाश॥

(627)

सुमधुर दर्शन हो प्रभो, दो ऐसा गुरु ज्ञान।
चिंतन प्रभु का हो सदा, चित्त रहे बस ध्यान॥

(628)

सुमति ज्ञान आ दो तुरत, दूर करो प्रभु मोह।
चिंता व्यापी चित्त में, अब लो मेरी टोह॥

(629)

सुधि जन रहते खुश सदा, जो कुछ भी मिल जाय।
सुख बढ़ता जाता सदा, मन मैं तोष समाय॥

(630)

सौंप चित्त सद्गुरु चरण, अर्पित कर दे भाव।
गुरु सेवा निष्काम कर, पार लगेगी नाव॥

(631

सैनिक सँहरक विकट, केहरि मद सी चाल।
मारा दुश्मन को पटक, ओढ़ शेर की खाल॥

(632)

सींच देह की बेलड़ी, चढ़ी द्वेष की बेल।
स्वच्छ हृदय प्रभु नाम से, कटे कलुष मन मैल॥

(633)

सृष्टि नियन्ता जग रमण, विष्णु जिष्णु गोविन्द।
पीताम्बर पट वरण कर, मधुकर श्याम मिलिन्द॥

(634)

स्वप्न सुनहरे बांटती, मन की सुरभित आस।
छाया वारिद मन गगन, जाए न भानु भास॥

(635)

स्वच्छ हृदय किस विध करूँ, घणो करे उत्पात।
ले साबुन हरि नाम की, मलूँ चित्त दिन रात॥

(636)

स्वर पिक का सौन्दर्य है, पतिव्रत स्त्री चरित्र।
कुरूप सुन्दर ज्ञान से, संत किये तप पवित्र॥

(637)

स्वाति मध्य गिर बूंद भी, मोती सीप बनाय।
उत्तम मध्यम अरु अधम, होनी गति बतलाय॥

(638)

स्वाति बून्द की चाह में, प्रभु जी करता याद।
तड़प पपीहा सा फिरूँ, सुन लो अब फरियाद॥

(639)

स्वच्छ रहे जल ताल का, गर ये बहता जाय।
अर्जित धन की वृद्धि तो, दान करे सो पाय॥

(640)

स्व पर यदि विश्वास नहीं, भाग्य करे उतपात।
स्वभिमान सामर्थ भर, करें कर्म की बात॥

(641)

हर गिरि माणिक नहि मिले, नहि मुक्ता गज माथ।
हर वन चन्दन का नहीं, साधु न हर पल साथ॥

(642)

हरित कृषि दुर्भिक्ष हरे, प्रभु जाप हरे पाप।
द्वन्द मेटता मौन ही, हर जाग्रति भय-ताप॥

(643)

हर्ष शोक अवसाद में, खोता मनुज विवेक।
संत वही कहलाय जो, रहे सदा ही एक॥

(644)

हृदय तंत्रिका द्वंदु की, मचा रही है शोर।
ज्ञान चक्षु ज्यों ही खुले, हर्षित हुई विभोर॥

(645)

हारे से मन हारता, क्षणिक विफलता देख।
मन बल को क्यूँ टालता, बदल भाग्य के लेख॥

(646)

हिम हेमंत हिरण्य है, हृदय हरित द्युति हेम।
श्याम प्रीत की शीत में, शीतल शाश्वत प्रेम॥

(647)

हिवड़े बैठ्यो सांवरो, खुशियां दे अनमोल।
दूर दूर चाहे रहे, मीठे लागे बोल॥

(648)

हिचकोले खाती रही, जीवन नौका यार।
मिली दिशा तब ही सही, मिला ईश का प्यार।।

(649)

हिम्मत जो न छोड़ता, कभी जलधि के बीच।
गिरि चोटी चढ़ता वही, भूमि नहीं वो नीच॥

(650)

है हिरण्य हेमंत हिम, हेम हिमाद्रि हिमांशु।
शिशिर शीत की शीतता, शीतल रुचिर प्रेम॥

(651)

हूँ अति विनीत नमित माँ, कल्मष पापी क्षम्य।
शरणागत हूँ आपका, मैं मद लोभी गम्य॥

(652)

हरी भरी बगिया हृदय, चौतरफ़ा मुस्कान।
रहे प्रेम जल सींचता, माली चतुर सुजान॥

(653)

हो भूषण के छंद सी, चाणक्य रची श्लोक।
रहीम के दोहों में बसी, प्रभाषित तीन लोक॥

(654)

होगा लिखवा भाग्य का, कोशिश कर लो लाख।
झोली भर भरकर मिले, वरन मिलेगी राख॥

(655)

हो दुर्जन विद्वान यदि, कर दीजै बहिष्कार।
मणि से भूषित सर्प भी, डरवाते हर बार॥

(656)

हंस छोड़ निज भाव को, करे पृथक जल क्षीर।
कौन करे यह काज जब, छोड़ें कर्म सुधीर॥

(657)

क्षणभंगुर जीवन सतत, मन धन सब छुट जात।
लाठी यम की निर्दयी, पूरे कर ले काज॥

(658)

क्षमा याचना अरि करे, क्षमा न करिए आप।
घाव करे वो पीठ पर, खल का वध निष्पाप॥

(659)

त्रिलोक स्वामी आ धरा, लीला करते खास।
जूठी छाछ लपेट मुख, रीत प्रीत की आस॥

(660)

ज्ञानदीप पथ चेतना, सज्जित तृष्णा रूप।
छोड़ अहं कर साधना, मार्ग प्रशस्त अनूप॥

कुछ दोहे
मीतू कनोडिया के

(661 से 711 तक)

(661)

अर्जुन उवाचः
महाबाहु, हृषिकेश, हे केशिनिषूदन तात।
त्याग और संन्यास का, मर्म कराओ ज्ञात॥

(662)

अनहद की जब धुन सुनी, भूली सब संगीत।
आत्म स्वरूपा राधिका, खोजे अपना मीत।।

(663)

इक घनमीटर माप का, लेना ऐसा जार।
उसकी क्षमता जान लो, लीटर एक हजार।।

(664)

कुछ कहते हैं त्याग दें, दोष समझ सब कर्म।
पर कुछ कहते दान, तप, यज्ञ न तजना धर्म।।

(665)

खन खन खन कंगन बजे, बजे पैंजनी पाँव।
स्वप्न सजाये भामिनी, चली पिया के गाँव।।

(666)

खेलकूद कसरत करो, दौड़ लगाओ रोज।
जीवन जीना सीख लो, लाओ खुशियाँ खोज।।

(667)

खुशियाँ संजोने चली, सज जोड़े में लाल।
हार गले में खिल रहा, टीका सोहे भाल।।

(668)

चुम्बक विद्युत क्षेत्र में, यदि होता गतिशील।
तब उनके भी लम्बवत, बल होता है फील।।
(फ्लेमिंग के बाएँ हाथ का नियम)

(669)

छठ पूजन आदित्य का, सर्वविदित त्योहार।
इसे निभाये प्रेम से, वह है राज्य बिहार।।

(670)

जिस मन्दिर गो-गृह नहीं, त्यागो उसका भोग।
घर में लड्डू बाँधकर, कर लेना उपयोग।।

(671)

टर टर टर करने लगे, बरसाती मण्डूक।
उनसे दूरी ही भली, बातें भी दो टूक।।

(672)

दस की हो ऋण घात दस, बोलो उसका नाम।
अंश हुआ दस अरबवाँ, कहते ऐंगस्ट्राम।।

(673)

दिनकर की जब रश्मियाँ, छूती वसुधा गात।
पाकर के स्नेहिल छुअन, होता नवल प्रभात।।

(674)

दिनकर का करके तिलक, रोली से अभिराम।
करे विदाई जब धरा, जग कहता है शाम।।

(675)

दौड़ लगाती जिन्दगी, है मानव हैरान।
क्या पकड़ें, क्या छोड़ दें, कैसे हो संज्ञान।।

(676)

धन दौलत सबसे बड़ी, अपनों का विश्वास।
अपने हों जब साथ में, मिट जाता संत्रास।।

(677)

निरख थिरकती हरिप्रिया, वंशी धुन में लीन।
देते जग को मुक्ति जो, हरि हो गये अधीन।।

(678)

पर्व सुपावन हिन्द के, मनुज प्रकृति संवाद।
कण-कण में संजीवनी, जीवन का आह्लाद।।

(679)

पंचदेव पूजन करें, करें सदा उपकार।
धन वैभव से घर भरे, सुखी रहे परिवार।।

(680)

पुरखों की भाषा रही, हिन्दी मातु समान।
संवैधानिक दृष्टि से, भी है इसका मान।।

(681)

पावस की ऋतु आ गयी, निसदिन पड़े फुहार।
भाँति भाँति के पुष्प से, धरती करे जुहार।।

(682)

प्राची के सौभाग्य से, रवि आता है भोर।
स्वर्ण लुटाता भूमि की, थामे जीवन डोर।।

(683)

भव बन्धन से मुक्त है, शिशु है सन्त समान।
इसको माँ की चाह है, वे चाहें भगवान।।

(684)

भक्तों मन्दिर में करो, दर्शन मस्तक टेक।
हृद में प्रभु को धारकर, करो भाव अभिषेक।।

(685)

भाव भरी हिन्दी सरस, आडम्बर से दूर।
छंदों की पायल पहन, मन को करे मयूर।।

(686)

मधुर मदिर दिन रैन हों, जीवन में हो प्यार।
हिल मिलकर खिलकर रहें, तब जीवन का सार।।

(687)

मंद मंद मुस्का रही, ज्यों फूलों की डाल।
गर्वित होकर सोहती, धरती मालामाल।।

(688)

मात्र कर्म कर्तव्य है, समझु करहिं मतिमान।
फल-इच्छा, आसक्ति बिन, उनको सात्विक जान।।

(689)

योग लम्ब-आधार के, वर्गों का जो लेंय।
कर्ण-वर्ग सम हो वही, बौधायनी प्रमेय।।
(बौधायन-पाइथागोरस का सिद्धांत)

(690)

यूनिट का दस लाखवाँ, हिस्सा माइक्रॉन।
पहले यह भी जान लो, पढ़ने के विज्ञान।।

(691)

रथ लेकर के जा रहा, रवि पश्चिम के देश।
विरह ज्वाल से हो व्यथित, खुले धरा के केश।।

(692)

रवि के स्वागत के लिये, सजा गगन का गात।
मनहर सुन्दर चित्र यह, कौन बनाता प्रात।।

(693)

रंगों का त्यौहार फिर, आता है हर साल।
प्रेम रंग सबसे मधुर, मल दे स्वतः गुलाल।।

(694)

रंग बसंती छा गया, वसुधा पर चहुँओर।
मन प्रसून खिलने लगे, मौसम है चितचोर।।

(695)

रंग बिरंगे स्वप्न भी, होंगे सब साकार।
पहले इनको पूर्णतः, लेने दें आकार।।

(696)

रौनक बढ़ी तड़ाग की, भानु रहा रथ मोड़।
खगकुल कलरव कर रहे, शाखों को झिंझोड़।।

(697)

लखकर पूरा चन्द्रमा, सिंधु उछलता खूब।
मावस पर जब ना दिखे, रोता दुख में डूब।।

(698)

लक्ष्मीपति के राज में, बरसे स्वर्ण अकूत।
फिर किस कारण कर रहे, भ्रष्टाचार कपूत।।

(699)

शिव को प्रिय है बेल फल, पायस, गंगा नीर।
आक धतूरा भी चढ़े, भूतनाथ के तीर।।

(700)

सफल धरा पर है वही, जो माँ को दे मान।
माता के व्यक्तित्व को, देता ऊँचा स्थान।।

(701)

सरिताएँ आती रहीं, दे दे अपनी भेंट।
बाँह बढ़ा तब सिंधु ने, उनको लिया समेट।।

(702)

सभी भुजाएं जोड़कर, बन जाता परिमाप।
वृत्तों में इसको परिधि, कहते हैं हम आप।।

(703)

सूरज का अर्चन किया, मुदित धरा ने भोर।
माणिक सम छवि देखकर, खुद हो गयी विभोर।।

(704)

सूर्य चंद्र सरि वृक्ष सब, कर्म करें निष्काम।
यज्ञ कर रहे हैं सतत, निष्ठा से अविराम।।

(705)

सांझ ढले सूरज पथिक, चला क्षितिज की ओर।
देने का वादा किया, पुनः सुहानी भोर।।

(706)

सौ मीटर की ले भुजा, वर्ग बनाकर टेक।
उसका है जो क्षेत्रफल, वह हेक्टेयर एक।।

(707)

स्वस्ति कामना कर रहे, सस्वर खग समवेत।
गगन पटल भी सज रहा, सांध्य सुंदरी हेत।।

(708)

स्वप्न नगर है लखनऊ, बँधी अजानी डोर।
इसकी सुधियाँ ही हमें, ले आतीं इस ओर।।

(709)

हिन्दी, बोली हिन्द की, सुरवाणी है मूल।
आँचल में इसके खिले, गीत ग़ज़ल के फूल।।

(710)

हिन्दी सबको जोड़ती, इसमें है अपनत्व।
सदाचरण, सम्मान का, होता इसमें तत्व।।

(711)

क्षिति को वैभव दे रहा, जल को मृदुल हिलोर।
संध्या दीपक रख चला, अस्ताचल की ओर।।

परिचय

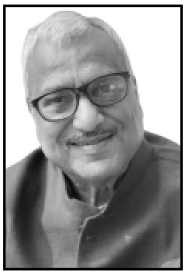

सुरेश चौधरी 'इंदु'

पिता का नाम : स्व. भोलाराम चौधरी
माता का नाम : श्रीमती दुर्गावती चौधरी
जन्म स्थान : जमशेदपुर (वर्तमान में झारखंड)
जन्म तिथि : 14 जुलाई, 1952

शिक्षा : विज्ञान में स्नातक, चार्टर्ड एकाउंटेंट्स, एकोल सुपेरियारे रोबर्ट दी सौबोर्न फ्रांस द्वारा पीएचडी (अर्थ एवं वित्त विश्लेषण) में स्वीकृत मानद; (BSc, FCA, PhD) आरंभिक शिक्षा जमशेदपुर भारतीय मोडल स्कूल कक्षा 7 तक, फिर ADLS हाईस्कूल में मैट्रिक 1963-1967, फिर जमशेदपुर को-ऑपरेटिव कॉलेज से विज्ञान में स्नातक (1967-1971)। इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स कोलकाता (दास एंड प्रसाद) से चार्टर्ड (1972-1976)।

जीवन वृतांत : 1977-1982, उषा अलॉयस एंड स्टील्स में मैनेजर फाइनेंस के रूप में कार्य। 1982-83 बिहार अलॉइ स्टील्स लिमिटेड में वाइस प्रेसीडेंट कमर्शियल। तत्पश्चात् निजी इस्पात एवं इस्पात से संबंधित कुल 18 कारखाने बड़ोदरा, गोधरा, मेघनगर, जमशेदपुर, चांडिल, बड़बिल, कोलकाता में लगाये। 2008 से 2011 तक आर्थिक सलाहकार के रूप में कार्य किया।

लेखन में रूचि 2011 से स्वास्थ्य के चलते। सभी कार्य छोड़कर केवल अध्ययन एवं लेखन की ओर झुकाव, तब से नियमित लेखन एवं शोध कार्य। लेखन में विशेष कर-हाइकु, मुक्त छंद, छंद मुक्त, छंद, बाल कविता, आलेख, आध्यात्म, शोध वैदिक सनातन दर्शन एवं आर्थिक विषय पर। भारत की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेखों एवं कविताओं का नियमित प्रकाशन, अंतर्राष्ट्रीय ब्लॉग अकेदेमिया, एडु में नियमित लेख प्रकाशन।

'ताजा टीवी' एवं 'दूरदर्शन' पर समय-समय पर चर्चाओं में भागीदारी।

अनुवादित कार्य का विवरण

1.1 श्री दुर्गतिविनाशनी : श्री दुर्गा सप्तशती का भावानुवाद छंद मुक्त लयबद्ध जिसकी विवेचना

महामंडलेश्वर साक्षी जी महाराज एवं प्रसिद्ध साहित्य समीक्षक श्री वीरेन्द्र गोस्वामी, जयपुर ने लिखी। पुस्तक के दो संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

1.2 प्रांजलि (भाग-2) : श्रीमद्भागवत एवं वेदों के 101 सूक्तों पर आधारित छंद मुक्त प्रार्थनाएँ, समीक्षा डॉ. उम्मेद सिंह बैद, पुस्तक में प्रार्थना के साथ उधृत श्लाकों की संख्या भी दी गयी है।

1.3 वेद से वेदांत तक-मूल पाठ सहित : 9 उपनिषद : ईशोपनिषद्, केन उपनिषद, कठोपनिषद, प्रश्न उपनिषद, मंडूक उनिपद, मांडूक्य उपनिषद, ऐतरिय उपनिषद, तैतरीय उपनिषद, श्वेताश्वेतर उपनिषद का छंद मुक्त काव्यात्मक अनुवाद, पुरुष सूक्त एवं नासदीय सूक्त का छंदोबद्ध अनुवाद। **समीक्षा :** अंशु त्रिपाठी, प्रसिद्ध कवयित्री, डॉ. अल्पना गोस्वामी, विभागाध्यक्ष कलकत्ता विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग।

1.4 आदिशंकर रसमाधुरी :

मूल संस्कृत पाठ के साथ : आदि शंकराचार्य के निम्नलिखित स्त्रोतों का छंदोबद्ध अनुवाद

1. भजगोविंद : चौपाई एवं दोहों में अनुवाद
2. महिषासुर मर्दिनी : कनक मंजरी छंद
3. देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रम् : हरिगीतिका छंद में
4. निर्वाण षटकम : कुकुम्भ छंद में
5. श्री गंगा स्त्रोत : लावणी छंद में अनुवाद
6. कनकधारा स्त्रोत : मूल छंद में

आशीर्वचन प्रसिद्ध गौ भक्त संत एवं रामजन्मभूमि के प्रमुख आचार्य धर्मेन्द्र द्वारा।

1.5 हर हर महादेव : मूल संस्कृत पाठ के साथ मंत्रों एवं स्त्रोतों का छंदोबद्ध अनुवाद : विषय की विषद व्याख्या स्व-लिखित

1. शिव स्तुति-स्व-रचित संस्कृत में
2. महामृत्युंजय मंत्र : धनाक्षरी में
3. शिव पंचार मंत्र : चतुष्पदी में
4. द्वादश ज्योर्तिलिंग : चतुष्पदी में
5. रावण रचित शिवताण्डवस्तोत्रज़

यह स्त्रोत अनंग शेखर छंद में लिखा गया है, इसे इसी छंद में अनुवाद किया है।

6. श्री शिव महिम्न स्तोत्र : चतुष्पदी एवं लावणी छंद
7. रूद्राष्टक (तुलसीदास रचित) : चतुष्पदी में
8. शिव मानस पूजा स्त्रोत : षष्टपदी में आशीर्वचन आचार्य धर्मेन्द्र जी एवं बालव्यास जी द्वारा

1.6 सुभाषितम : मूल संस्कृत श्लोकों सहित भारतीय नीतिशास्त्र एवं विभिन्न सुभाषित 108-108 श्लोकों की दो माला का दोहों में अनुवाद।

1.7 गोपी गीत : यूँ तो गोपी गीत 19 श्लोकों का एक गीत जो इंदिरा छंद में लिखा गया है, परंतु यह गहन शोध का विषय है एवं प्रत्येक श्लोक अध्यात्म की ऊँचाई की छूता दृष्टिगत है।

इसका अनुवाद भी इंदिरा छंद में ही किया है और विस्तार और विस्तृत भाष्य विभिन्न छंदों में है। यह एक खंड काव्य है।

1.8 सुर तरिंगिणी : देव सरिता माँ गंगा की समस्त कहानी एवं संस्कृत मूल के साथ गंगा लहरी, गंगा स्त्रोत, गंगाष्टकम (कालिदास, आदिशंकर, वाल्मीकि द्वारा रचित) का छंदों में अनुवाद, गंगा का अवतरण हुआ है तो क्या हुआ होगा व्यवहारिक दृष्टिकोण।

1.9 अप्रकाशित : भागवत में वर्णित अनेक गीतों एवं स्तुतियों जैसे, भ्रमर गीत, वेणु गीत, वर्षा गीत, कुन्ती द्वारा स्तुति, गर्भ स्तुति, गज मोक्ष मंत्र आदि का मूल संस्कृत पाठ सहित विभिन्न छंदों में अनुवाद।

विवरण इस प्रकार है :-

क्रम	सूक्त/गीत/स्तुति वेदों से	मूल छंद	अनुवाद का छंद
1.	पुरुष सूक्त	निचृदनुष्टुप	चतुष्पदी
2.	नाशदीय सूक्त	नीचृत्रिष्टुप	चतुष्पदी
3.	हिरण्यगर्भ सूक्त	त्रिषटुप	लावणी
4.	संज्ञान सूक्त	विराननुष्टुप	गीतिका
5.	श्री सूक्त	महा जगति	हरिगीतिका
	भागवत के गीत/स्तुति		
6.	भ्रमर गीत	शार्दूलविक्रीडीत	हरिगीतिका
7.	वर्षा गीत	वसांततालिका	दोहा-चौपाई
8.	यूगल गीत	स्वागता	स्वागता
9.	वेणु गीत	वंशस्थ	हरिगीतिका
10.	प्रणय गीत	उपेन्द्रवज्रा	कुकुम्भ
11.	धुन गीत	वसंततालिका	कुकुम्भ
12.	गजेन्द्र मोक्ष	स्तरगधरा	दोहा-चौपाई
13.	कुंती स्तुति		चतुष्पदी
14.	वसुदेव स्तुति		चतुष्पदी
15.	गर्भ स्तुति		धनाक्षरी
16.	चतुर्शलोकी भागवत		धनाक्षरी
17.	अन्य: कृष्णाष्टकम	पैंचचामर	पैंचचामर

अन्य भाषा से अनुवाद

2.10 अड़सठ शरद रवीन्द्र की शरण : रवीन्द्र के मूल 68 बंगला गीतों को देवनागरी में लिखकर अनुवाद प्रथम अनुवाद है, जो छंदबद्ध है। अभी तक जितने भी अनुवाद हुए हैं, वे सब छंद मुक्त अतुकांत या तुकांत अनुवाद ही हुए हैं। इसकी समीक्षा प.बंगाल के पूर्व राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठी जी, कलकत्ता विश्वविद्यालय की विभागाध्यक्ष डॉ. राजश्री शुक्ला, प.बंगाल शिक्षण विश्वविद्यालय

की उपकुलपति डॉ. सोमा बंदोपाध्याय एवं पं. सुरेश नीरव ने की है।

अध्यात्म एवं धर्म पर आधारित पुस्तकें

3.11 भारतीय दर्शन : भारत के मुक्त 6 दर्शनों का परिचय। इसमें सनातन धर्म के आस्तिक दर्शनों की प्रारंभिक जानकारी है।

3.12 भारत की अन्य दर्शन : भारत के अन्य दर्शन जिन्हें नास्तिक दर्शन कहा गया है। उनके बारे में प्रारंभिक जानकारी, ये दर्शन जैसे चवार्क, बुद्ध, जैन दर्शन हैं।

3.13 वेदान्त : आदि शंकराचार्य द्वारा चार धामों के चार महावाक्य की विस्तृत चर्चा, जिसकी भूमिका लिखी है दर्शन के महाज्ञानी डॉ. उम्मेद सिंह वैद ने।

3.14 श्रीमद्भागवत महापुराण-परिचय एवं समीक्षा : श्रीमद्भागवत को पंचम वेद भी कहा गया है पर आजकल हर गली-मोहल्ले में हम भागवत के पाठ पर फिल्मी तर्ज के गानों पर लिखे भजनों पर नृत्य देखते हैं। एक व्यवहारिक दृष्टि से भागवत की समीक्षा की गई है, इसमें भागवत कथा के बारे में नहीं बल्कि उसके लिखने के उद्देश्य के बारे में बताया गया है।

3.15 वेदों का परिचय एवं समीक्षा : चार वेद क्या है। इनमें क्या विषय वस्तु है। इनका भाष्य किसने-किसने लिखा है। उन भाष्यों में क्या है। समुचित जानकारी जिसे एक हिन्दू को ही नहीं बल्कि विश्व के हर प्राणी को जानना आवश्यक है।

3.16 मनुस्मृति-परिचय एवं समीक्षा : कालांतर में मनुस्मृति को अभिशाप घोषित कर दिया गया है, जबकि यह हर भारतीय की और भारतीय संस्कृति की रूलबुक है। इसमें जन्म से मृत्यु तक के सभी संस्कारों के निर्वहन का नियम बताया गया है। प्रस्तुत पुस्तक में प्रेक्षप मंत्रों एवं शंकाओं का निवारण करने का प्रयत्न किया गया है।

3.17 भ्रम और भ्रांतियाँ : सनातन धर्म में व्याप्त भ्रम जैसे दलित का शोषण 5000 वर्षों से हो रहा है इत्यादि का तथ्यपरक उत्तर, कई भ्रांतियाँ दूर होंगी इसे पढ़ने से।

शोध पुस्तक

3.18 चमत्कृत करती भाषा संस्कृत : संस्कृत कितनी चमत्कारी भाषा है, उसके हर पहलू पर क्रमश: आलेख लिखे थे, उनका संग्रह इस पुस्तक में है।

काव्य

4.19 तिमिर ढलेगा : आशाओं को जागृत करती 101 प्रेरक कविताओं की पुस्तक जिसका तीसरा संस्करण छप कर आ चुका है।

4.20 बुलबुले-सी जिंदगी : 101 छंद मुक्त कविताएँ जीवन के विभिन्न पहलुओं पर लिखी हुई, जिसकी समीक्षा प्रसिद्ध गीतकार रमेन्द्र मोहन त्रिपाठी एवं प्रसिद्ध लेखक शिखर चंद जैन ने लिखी है, पुस्तक का दूसरा संस्करण उपलब्ध है।

4.21 कुछ माणिक कुछ मोती : प्रांजल हिन्दी में रचित छंदबद्ध कविताएँ अलग-अलग विषय पर क्रमबद्ध, समीक्षा प्रख्यात गीतकार श्री विष्णु सक्सेना, श्रीमती सरिता शर्मा एवं प्रख्यात साहित्यकार डॉ. प्रेम शंकर त्रिपाठी ने लिखी हैं, पुस्तक आर्ट पेपर पर बहुरंगी है।

4.22 प्रांजलि : जीवन दर्शन पर आधारित 101 प्रार्थनाएँ, छंद मुक्त, समीक्षा वीरेन्द्र गोस्वामी, सर्वेश अस्थाना एवं भागवताचार्य पं. श्रीकांत शर्मा बालव्यास जी ने लिखी है। पुस्तक के दो संस्करण आ चुके हैं।

बाल गीत

4.23 आसमान को छू लें : जयपुर के कल्याण सिंह शेखावत के संग यह बाल गीत की पुस्तक बहुरंगी बड़ी साइज में बालकों को मोहती बनी है, जिसकी समीक्षा प्रसिद्ध बाल लेखक संजय जायसवाल 'संजय' एवं आकाशवाणी, कोलकाता की उद्घोषिका सविता पोद्दार ने लिखी है।

अन्य काव्य

4.24 हे माँ : कुल देवी शक्ति स्वरूप माँ जीण भवानी को समर्पित पुस्तिका जिसमें संस्कृत स्तुति से आरंभ कर के 18 सनातन छंदों की रचनाएँ लिखी गई है।

4.25 माँ : मेरी जननी को हर वर्ष काव्याभ्ली देता रहा हूँ, उनके देहावसान पर समर्पित पुस्तिका, जिसमें 20 गीत छंद बद्ध एवं छंद मुक्त दोनों है।

4.26 शून्य से शून्य तक : दृश्य बनाते हुए 81 कविताएं जो जीवन के विभिन्न आयामों पर लिखी गई है, ये कविताएं छंद मुक्त ले बद्ध है।

विविध

5.27 मूल्यांकन : भारतीय अर्थव्यवस्था का आंकलन 2019 में इसे स्व. विलास राव जी के सहयोग से लिखा था। भारत अर्थव्यवस्था के हर पहलू पर गहन चिंतन आंकड़ों के साथ एवं सुझाव प्रधानमंत्री कार्यालय भेजे गए, जिसमें कई सुझावों को मंजूरी मिली।

5.28 भारत की आर्थिक स्थिति में क्या उचित (प्रकाशनाधीन) : समय-समय पर भारतीय अर्थव्यवस्था पर लेख लिखता रहा हूँ। नोटबंदी का सुझाव भी देने वाले कुछ लोगों में से मैं भी था। इन लेखों को एकत्रित कर पुस्तक का रूप दिया गया है।

5.29 भारतीय काव्य संहिता : भारत में प्रचलित सभी काव्य विधाओं का विवरण लिखने की विधा कैसे लिखें, किन बातों का ध्यान रखें-छंद, छंद मुक्त, मुक्त छंद, हाइकु, गीतिका, गज़ल इत्यादि।

यात्रा संस्मरण

5.30 ऐक्सडेनल टूर इन हाइबेरनेसन : यात्रा संस्मरण, लेख की अनियोजित यात्रा के 7 माह जिसमें उसने पूरे भारत का भ्रमण किया। उन भ्रमणों का रोचक विवरण ललित निबंध रूप में। पुस्तक निखिल प्रकाशन आगरा से प्रकाशित।

संवत 2081 में प्रकाशित

5.31 : इंदु प्रभा - छंद बद्ध कविताओं का संग्रह जिन्हें विषयानुसार अनुक्रमित किया गया है।

5.32 : मैं जीवन दंड विधान हूं-नवगीत एवं छंद वद्ध गीतों का संग्रह

5.33 : लघु उपनिषद त्रयी (मांडूक्य, ईश, केन उपनिषद का व्यावहारिक अर्थों सहित भाष्य मूल श्लोक के साथ)

5.34 : इंदु पदावली (कृष्ण भक्ति पद) : 92 कृष्ण भक्ति के एवं 21 राम भक्ति के पद। पद जो एक लुप्त होती विधा है, उसे पुनर्जीवित करने का प्रयास।

5.35 : इंदु पदावली (भाग 2) निर्गुण पद : कबीर, रैदास, दादू इत्यादि संतों की परंपरा को बढ़ाते हुए 95 निर्गुण पद।

5.36 : दोहांजलि, निर्गुण सगुण एवं नीति परक 711 दोहों का अनुपम संग्रह जिसमें 51 दोहे मीतू कनोडिया जी के सौजन्य से समाहित किये गए हैं।

कुछ प्रमुख सम्मान :

1. भारत गौरव (इस्पात में अभूतपूर्व कार्य हेतु तत्कालीन इस्पात मंत्री के कर-कमलों से दिल्ली की एक स्वयंसेवी संस्था द्वारा।)
2. केंद्रीय सचिवालय द्वारा राजभाषा गौरव पश्चिम बंगाल के तत्कालीन राज्यपाल श्री केशरीनाथ त्रिपाठी जी द्वारा।
3. विद्या वाचस्पति की मानद उपाधि विक्रमशिला हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा।
4. साहित्य शिरोमणि दामोदरदास चतुर्वेदी साहित्य शिखर सम्मान 2021 एवं 2022 (पूर्व में यह सम्मान अटल बिहारी वाजपेयी, पंडित गोपालदास नीरज, उदप्ताप सिंह जी इत्यादि को मिला है।)
5. श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार साहित्य सम्मान, अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन पूर्वी सिंहभूम शाखा द्वारा।
6. साहित्य मार्तण्ड सम्मान प्रसिद्ध संस्था बिहार हिंदी सम्मेलनी, पटना द्वारा।
7. हिंदी साहित्य शिरोमणि मानद सम्मान, साहित्य मण्डल श्रीनाथ द्वारा।
8. 'हिंदी सेवा सम्मान' श्रवण संस्था व शोध संस्थान, हरिद्वार द्वारा।
9. कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' साहित्य रत्न सम्मान सह नगद राशि प्रख्यात संस्था अभ्युदय द्वारा।
10. मानद पीएचडी वैदिक हिंदी साहित्य में लेगॉस यूनिवर्सिटी की शोध इकाई 'इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनस मैनिज्मन्ट एंड रेसर्च टेक्नोलॉजी' द्वारा।

विशेष उपलब्धि : 1116 दिनों में 1000 भजन लिखकर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया जो कि इंटरनेशनल बुक ऑफ रेकॉर्ड्स द्वारा प्रकाशित और प्रमाणित किया गया।

साहित्यिक एवं सामाजिक गतिविधि : अंतर्राष्ट्रीय संस्था रचनाकार (शुक्तिका इंडिया फाउंडेशन का एक प्रकल्प) के संस्थापक सभापति, संस्था प्रति वर्ष साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु दस व्यक्तियों को सम्मानित करती है एवं नगद राशि भी भेंट करती है।

शुक्तिका इंडिया फाउंडेशन के संस्थापक न्यासी जो कैंसर पीड़ित असहाय रोगियों के नि:शुल्क चिकित्सा की सुविधा प्रदान करती है।